श्री नेमिनाथ दि. जैन नया मंदिर ट्रस्टान्तर्गत संचालित श्री नंदीश्वर विद्यापीठ चेतनबाग खनियाँधाना द्वारा प्रकाशित

नव - प्रसूत

ई - मासिक पत्रिका

वर्ष-द्वितीय(2022)
अंक - चतुर्थ

प्रधान संपादक
साहित्याचार्य शास्त्री दीपक जैन 'ध्रुव'

धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा व संस्कारों की पोषक पत्रिका . . .

माह - अक्टूबर

भगवान महावीर स्वामी निर्वाणोत्सव विशेषांक

चतुर्थ अंक (वर्ष द्वितीय)
माह - अक्टूबर 2022

नव प्रसूत

02

धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा व संस्कारों की पोषक पत्रिका . . .

ई - मासिक पत्रिका

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	प्रस्तुति	विवरण	पृ.सं.
1	वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता है	शास्त्री दीपक जैन 'ध्रुव'	संपादकीय	4
2	सुखद एवं दुःखद रीतियाँ	ब्र. अमित भैया	लेख	5
3	दीपावली पर क्या करें क्या न करें	ब्र. सुमतप्रकाशजी	लेख	6
4	भगवान महावीर और अहिंसा धर्म	पं. रितेश जैन	लेख	7
5	निर्वाण यात्रा	ब्र. प्रीति जैन 'पुजारी'	लेख	10
6	निर्वाण लाडू का स्वरूप	पं. सतीश शास्त्री	लेख	12
7	स्वास्थ्य के अहिंसक नुस्खे	डॉ. दीपक जैन 'वैद्य'	आयुर्वेद	14
8	परिचारक निर्देश	ब्र. रवीन्द्र जी 'आत्मन्'	जीवनोपयोगी	15
9	महावीर स्वामी के सिद्धांतों की वर्तमान में उपयोगिता	डॉ. रेखा जैन	लेख	18
10	सच्चे अर्थों में वीर निर्वाणोत्सव	पं. शुभम शास्त्री	लेख	21
11	वीर निर्वाण संवत	पं. अनुभव शास्त्री	लेख	23
12	अनुमोदना	पं. स्वानुभव शास्त्री	लेख	24
13	निर्वाणोत्सव मनाना कब सार्थक ?	पं. नमन शास्त्री	लेख	27
14	महावीर दशक	पं. नमन शास्त्री	कविता	28
15	निर्वाणोत्सव पर हमारे कर्त्तव्य	प्रतीति मोदी	लेख	29
16	दीपावली अर्थात ज्ञानदीपोत्सव	सोमचन्द जैन	लेख	31
17	अहिंसा परमोधर्मः	संकलित	लेख	32
18	वीर निर्वाण महोत्सव	पं. रोहित शास्त्री	लेख	33
19	पटाखे फोड़ कर त्यौहार को अशुभ न करें	पं. संजय शास्त्री	लेख	34
20	अच्छे काम	ब्र. रवीन्द्र जी 'आत्मन्'	कविता	35
21	चलिए उत्सव में	ब्र. सुमतप्रकाशजी	कविता	35
22	महावीर निर्वाणोत्सव	शास्त्री दीपक जैन 'ध्रुव'	कविता	35
23	समकित चादर	सुरेशचंद जैन साव	कविता	36
24	गीत महावीर	अलका जैन	कविता	36
25	बाल कविता	संकलित	कविता	36
26	भगवान महावीर स्वामी	पं. ज्ञाता सिंघई	कविता	37
27	प्रभु श्री वीर प्रेरणा	मुकेश गोलेचा	कविता	37
28	कैसी दीपावली मनाई ?	ब्र. सहजता दीदी	कविता	38
29	जिओ और जीने दो	स्वप्निल जैन	कविता	38
30	चरण नही आचरण छुओ	डॉ अंशुल आराध्यम	कविता	38
31	जब अंतर का दीप जलेगा...	पं. शिखर शास्त्री 'चैतन्य'	कविता	39
32	भगवान महावीर	नरेंद्रपाल जैन	कविता	39
33	खुशियाँ बाँटे–प्रदूषण नहीं	कार्तिक शास्त्री	संदेश	39
34	भ.महावीर और भ.राम हमारे आदर्श कैसे ?	सिद्धार्थी अंकित शास्त्री	लेख	40
35	कैसे मनायें? महावीर निर्वाणोत्सव	पं. अभिनव शास्त्री	बोधकथा	43
36	भगवान महावीर	पं. अर्चित जैन	कविता	43
37	दिव्यता के दैदीप्यमान पुंज थे–महावीर	गणतंत्र जैन 'ओजस्वी'	लेख	44
38	गौतम स्वामी का वर्तमान जीवन	पं. अखिलेश शास्त्री 'अखिल'	लेख	45
39	दीपावली – एक गंभीर पर्व	पं. समकित शास्त्री	कविता	47
40	नव प्रसूत प्रतियोगिता क्र : 16	पं. अखिलेश शास्त्री 'अखिल'	वर्ग पहेली	48

मंगल आशीर्वाद

आदरणीय बाल ब्र. पण्डित
श्री रवीन्द्रजी 'आत्मन्' (अमायन)

परिसर परिकल्पना

आ.बाल ब्र.पं.श्री अभिनंदनकुमारजी
शास्त्री (प्रतिष्ठाचार्य)

मंगल-प्रेरणा

आ.बाल ब्र.पं.श्री सुमतप्रकाशजी
खनियाँधाना

मार्गदर्शक

पं.श्री राजकुमार शास्त्री
'जैनदर्शनाचार्य' उदयपुर

प्रमुख सलाहकार

श्री सुनील जैन 'सरल'
(महामंत्री - ट्रस्ट मंडल खनियाँधाना)

विशेष सलाहकार

श्री प्रमोद जैन 'प्रेम'
(प्राचार्य, श्री नंदीश्वर विद्यालय, खनियाँधाना)

प्रधान सम्पादक

साहित्याचार्य शास्त्री दीपक जैन 'ध्रुव'
(प्राचार्य - श्री नंदीश्वर विद्यापीठ, खनियाँधाना)

-: विशेष निवेदन :-

आप समस्त साहित्य सेवकों/रचनाकारों/लेखकों आदि से निवेदन है कि श्री नंदीश्वर विद्यापीठ/विद्यालय चेतनबाग खनियाँधाना शिवपुरी (म.प्र.) से प्रतिमाह 'नवप्रसूत-ई-मासिक पत्रिका' का प्रकाशन किया जाता है।

यह सर्वोपयोगी-ई-मासिक पत्रिका धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा व संस्कारों की पोषक है।

अतः आप अपनी उपर्युक्त विषयों पर कविता, आलेख, गीत, कहानी, लघुकथा, आदि विविध रचनाएँ हमें भेज सकते हैं। हम आपकी रचनाओं को ससम्मान स्वीकार कर नवप्रसूत ई-मासिक पत्रिका में यथासमय प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे।

साथ ही नवप्रसूत ई मासिक पत्रिका के समस्त पाठक वर्ग से भी निवेदन है कि आप भी पत्रिका पढ़कर/अवलोकन कर अपनी पाठकीय प्रतिक्रिया अवश्य प्रेषित करे।

पाठकों द्वारा प्राप्त प्रतिक्रियाएं पत्रिका के श्रेष्ठ वैचारिक संवाह के लिए हमें सर्वोत्तम संबल सिद्ध होगी।

अतः पाठक वर्ग की पाठकीय प्रतिक्रियाएं सादर आमंत्रित है।

निवेदक
प्रधान संपादक

नोटः- आप अपनी रचनाएं एवं पाठकीय प्रतिक्रिया 7389821495 पर व्हाट्सएप मेसेज द्वारा नाम एवं पूर्ण पता लिखकर प्रेषित करें।

चतुर्थ अंक (वर्ष द्वितीय)
माह - अक्टूबर 2022

नव प्रसून

04

धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा व संस्कारों की पोषक पत्रिका . . .

ई - मासिक पत्रिका

संपादकीय

'वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता है'

- साहित्याचार्य शास्त्री दीपक जैन 'ध्रुव'
(प्राचार्य - श्री नंदीश्वर विद्यापीठ)

सम्पूर्ण भारत वर्ष, आज अपनी संस्कृति व सभ्यता के अनुसार अपनी परंपराओं का निर्वहन करते हुए, चैन की नींद व सुख की सांसे ले पा रहा है। बढ़ती हुई पाश्चात्य विचारधारा और उसके प्रति बढ़ता हुआ हम भारत- वासियों का झुकाव, निश्चित ही हमें विरासत में प्राप्त हुई हमारे पूर्वजों की अमूल्यनिधि, ऐसी हमारी पवित्र एवं श्रेष्ठ संस्कृति से हमें दूर कर रहा है।

"अपनी संस्कृति से दूर होना, हटना यानि स्वघात की ओर कदम बढ़ाना है।" हमारे पूर्वजों ने समाज व संस्कृति के संरक्षण हेतु जिन आदर्श व मूल्यों की स्थापना की, वे परस्पर प्रेम, प्रीति, स्नेह, वात्सल्य एवं भाईचारा स्थापित एवं कायम रख पाने में सशक्त संबल है। हमें चाहिए कि हम उनकी अनुपालना करते हुए अपने जीवन को धन्य बनाने का प्रयास करें।

हमारे देश की संस्कृति पर्व प्रधान संस्कृति है। यहाँ दशहरा, होली, दशलक्षण (पर्युषण) पर्व, जैसे अनेकों पर्व समय-समय पर मनाये जाते हैं। इन्हीं पर्वों में से एक और विशेष आगामी पर्व है जिसे हम सभी "दीपावली" के नाम से जानते हैं। दीपावली या प्रकाश पर्व भारतीय संस्कृति का एक विशेष पर्व है। इसे सम्पूर्ण भारत वर्ष में विशेष हर्षोल्लास पूर्वक मनाया है। हम सब भी इस महापर्व को विशेषतयः मनाने के लिए उत्साह, जोश, उमंग एवं प्रसन्नता से तैयार हैं। बस इन्तजार है तो मात्र उस तिथि का जब हम सभी अपनी-अपनी परंपराओं के अनुसार इस पर्व को मनाते हुए सम्पूर्ण धरा को प्रकाशमय बनाने का प्रयास करेंगे।

परंतु पाठकों! यहाँ विचारणीय बात यह है कि हमारी पर्व मनाने की जो संस्कृति रही वह किसी-न-किसी आदर्श महापुरुष के जीवन से जुड़ी हुई होने के कारण, उनके प्रति विशेष भक्ति व आराधना से जुड़ी हुई है। आगामी दीपावली पर्व को भी प्रत्येक परंपरा में मनाने के अलग-अलग हेतु हैं। हमारे सनातनी हिन्दु भाई अपने इष्ट राजा राम के वन से अयोध्या पुनः आगमन पर खुशियाँ व्यक्त करते हुए, उनका स्वागत करते हैं और वह दिवस तब से लेकर आज तक दीपावली के रूप में मनाया जाता रहा है। इसी तरह से जैन परंपरा में वर्तमान चौबीसी के अंतिम तीर्थंकर शासननायक भगवान महावीर स्वामी के निर्वाणप्राप्ति के कारण, कार्तिक कृष्ण अमावस्या को "वीर निर्वाणोत्सव" या दीपावली के रूप में मनाया जाता है। इसी तरह अन्य परंपराओं में भी दीपावली मनाने के अलग-अलग हेतु व रूपक हैं। परंतु पाठकों यह विशेष तथ्य है कि हम अपनी-अपनी परंपरा में अपने इष्ट व आराध्य के प्रति बहुमान प्रकट करते हुए यह पर्व मनाते हैं।

कालक्रम के चलते हुए विकृतियों का नाग हमारी संस्कृति को डसता हुआ आया है जिसके दुष्प्रभाव से यह पर्व भी अछूता न रह सका। यहाँ भी अनेक प्रकार की विकृतियों ने अपने पांव जमा लिए....

हमारा आप समस्त पाठकों से निवेदन है कि जब हम अपने आराध्य के प्रति कृतज्ञता प्रगट करने के लिए इस पर्व को मनाते हैं, तो उनमें संस्कृति विरोधक विकृतियों को प्रवेश क्यों?

सभी पर्वों की भांति यह पर्व भी खुशियाँ बांटने व प्रसन्नता प्रगट करने का पर्व है तो हम इसमें पटाखा आदि विस्फोटक सामग्री को स्थान देकर अपने व अपनों के साथ खुशियों के नाम पर जानलेवी कार्य को बढ़ावा क्यों दे?

हम सब मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम व अहिंसा की प्रतिमूर्ति भगवान महावीर की संस्कृति के सपूत हैं तो फिर प्राणीमात्र को कष्ट, पीड़ा पहुँचे ऐसा निंदनीय कार्य क्यों?

हम विचार करें और समय के प्रवाहक्रम में प्रविष्ट यह कुरीति हम अपने स्वविवेक एवं निर्णय पूर्वक इसे यहीं विराम करते हुए भगवान राम व भगवान महावीर द्वारा उद्घाटित आदर्श अहिंसामयी वातावरण की स्थापना पर बल दें।

दुनिया में फैला पापाचार, भ्रष्टाचार, अनैतिकता पर्यावरण प्रदूषण के कारक आदि यह हमारे महाविनाश के कारण हैं।

धरती पर पसरे महाविनाश के समस्त हेतुओं से बचने का एकमात्र उपाय है :- अहिंसा।

हम पूर्ण अहिंसक हों। हमारा सारा प्रयास अहिंसा के लिए हो तो निश्चित ही वर्तमान समय की जो प्यास है कि-

"वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता है..."

"राम तुम्हारी बहुत जरूरत, धरती को है आन पड़ी है..."

यह शांतता को प्राप्त होगी। शेष विचारना....

लेख

सुखद एवं दुःखद रीतियाँ

- ब्र. अमित भैया, विदिशा

सुखद रीतियाँ अपनाएँ-

01. प्रातः सूर्योदय पूर्व भगवान मोक्ष पधारे, अतः शीघ्र उठकर उनका स्मरण करें। मोक्षकल्याणक का रूपस्थ ध्यान करिये। 108 बार 'ओम ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः' की माला फेरें।
02. जिनमन्दिर में जाकर प्रक्षाल-पूजा करिये। निर्वाणोत्सव मनाइए, प्रवचन सुनिये।
03. भगवान महावीर व गौतम स्वामी के पुराणों का स्वाध्याय कीजिये।
04. सायंकाल गौतम स्वामी को केवलज्ञान रूपी लक्ष्मी की प्राप्ति हुई थी, अतः जड़ लक्ष्मी की पूजा छोड़कर मंदिर जाकर उनका नाम स्मरण कीजिये। महावीराष्टक पढ़िए।

दुःखद रीतियाँ छोड़िये-

01. गृहीत मिथ्यात्व, लोकमूढ़ता के महापाप से बचिए। जैसे लक्ष्मी पूजन, रात्रि भोजन, बही-खाते, तराजू-बाँट, मीटर आदि पूजना, दीपक जलाना, असंख्यात जीवों का जिसमें घात हो ऐसे फूलों की माला से सजावट कराना आदि।
02. पटाखे मत फोड़िए।
03. बाजार की अभक्ष्य मिठाइयाँ न खाइए।

चतुर्थ अंक (वर्ष द्वितीय)
माह - अक्टूबर 2022

नव प्रसून

06

धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा व संस्कारों की पोषक पत्रिका . . .

ई - मासिक पत्रिका

लेख

दीपावली पर क्या करें क्या न करें

- बा. ब्र. पं. सुमतप्रकाशजी, खनियाँधाना

यह वीर प्रभु के निर्वाणोत्सव का पावन पर्व है न कि दीपावली या दीवाली। न करें रात्रि 4 बजे से भरना, पूजा सामग्री धोना, पूजा करना, यह सब रात्रि पूजन का दोष है। दिन निकलने पर ही सारे आरम्भ पूजन उत्सव होना चाहिए। हाँ जागकर निर्वाण भक्ति, महावीराष्टक आदि पढ़ना चाहिए। भगवान का निर्वाण जाने का, पावापुरी के दृश्य का ध्यान करके रूपस्थ ध्यान सफल करना चाहिए। मिठाई या बूंदी के लड्डू नहीं चढ़ाना चाहिये। पहले स्वाध्याय के अभाव में इनके चढ़ाने की परम्परा थी बाद में मात्र शक्कर के लड्डू चलन में आये परन्तु लड्डू गिरने से पूरे मंदिर में चींटियाँ हो जाती हैं जिससे उस-दिन बहुत हिंसा होती है। इसकी अपेक्षा नारियल का छिला गोला चढ़ाना सही है। प्रातःकाल या अन्य समय में भी पटाखे नहीं फोड़ना चाहिए। सायं/रात्रि काल में किसी की भी द्रव्य से पूजन करना गृहीत मिथ्यात्व (बही-खाते, मिठाइयाँ, चाँदी के सिक्के या मिट्टी की पुतली पूजना या किसी भी विधि से पूजा करना) है। मात्र भक्ति की जा सकती है। आज तो महावीर स्वामी का मोक्ष कल्याणक है अतः आज के दिन तो मंदिर भरे होने चाहिये। अच्छा हो कि हम 5-7 दिन कोई सुन्दर तात्विक आयोजन जैसे विधान, प्रवचन, महावीर कथा वाचन करा लें। सार्वजनिक सभा का आयोजन किया जा सकता है। कथा आधारित प्रतियोगिता, प्रश्न मंच चला सकते हैं। भजन बनाओ, पेंटिंग स्पर्धा आदि कई कार्यक्रम आयोजित किये जा सकते हैं। स्कूल, बाजार, समाज में पटाखे न चलायें, ऐसा अभियान चलायें। मन्दिर में दिया नहीं लगाना। हाँ मन्दिर की साज-सज्जा अवश्य की जावे। हिंसा न हो इसका ध्यान रखें। बाजार की मिठाइयाँ खरीदी, खाई या भेंट में न दी जावे। आज त्याग, संयम से रहना चाहिए। यह अहिंसा, त्याग, संयम व वैराग्य का पर्व है। मन्दिर में सफाई-पुताई के नाम पर भी मांसाहारी, अस्पर्शी-शूद्र आदि न हो तो आज युवक-युवतियाँ, महिला-पुरुष एक दिन में मन्दिर की सारी सफाई स्वयं कर सकते हैं। जिन प्रतिमाओं का मंजन करना एवं सिंहासन, क्षत्र, चंवर, वेदी आदि भी संवारने चाहिए। पूजन के बर्तन नए ही उपयोग में लें, पुराने नहीं। ध्वजा नई लगा देवें। पुरानी ध्वजा जलाकर विसर्जित कर देनी चाहिए। यहाँ-वहाँ लापरवाही से फेकना नहीं चाहिए। हाथों से सिलकर कपड़े की या कागज की झंडियों से मन्दिर सजाना चाहिए। समाज के प्रत्येक बच्चों को लगना चाहिए कि यह हमारा ही पर्व है तो उनसे ही मंदिर की ध्वजा लगवायें एवं मंदिरजी की साज-सज्जा कराएँ।

क्षत्रचूड़ामणि

नीति सुधा

सच्चे गुरु का स्वरूप -

रत्नत्रयविशुद्धः, सन्पात्रस्नेही परार्थकृत्।
परिपालितधर्मो हि, भवाब्धेस्तारको गुरुः।।

सरलार्थ :- जो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप 'रत्नत्रय' के धारक हैं, निष्पृह भाव से पात्र जीवों/शिष्यों पर स्नेह रखते हैं, जीवों को मोक्षमार्ग में लगानेरूप परोपकार करते हैं, यति धर्म का निरतिचार पालन करते हैं और दुःखरूप संसार से जीवों को मुक्ति दिलाते हैं, वे ही सच्चे गुरु हैं।

लेख

भगवान महावीर और अहिंसा धर्म

- पं. रितेश जैन, बाँसवाड़ा

भगवान महावीर भारत क्षेत्र में इस युग के चौबीसवें एवं अंतिम तीर्थंकर हैं। उनसे पूर्व ऋषभदेव से पार्श्वनाथ तक तेईस तीर्थंकर और हो चुके थे। भगवान महावीर ने कोई नया धर्म नहीं स्थापित किया, बल्कि धर्म में खोई आस्था को स्थापित किया है।

भगवान महावीर का जीवन नर से नारायण बनने और उनके उपदेश सार्वभौमिक, विश्व शान्ति के प्रेरक और भक्त से भगवान बनने के लिए हैं।

ईसा पूर्व 598 वर्ष अर्थात् आज से लगभग 2598 वर्ष पूर्व इसी भारतवर्ष में धन-धान्य से परिपूर्ण गणतन्त्र शासन की केन्द्र विशाल वैशाली नगरी के अन्तर्गत अत्यन्त मनोहर नगर कुण्डलपुर में प्रसिद्ध राजनेता लिच्छवि राजा सिद्धार्थ का शासन था। राजा सिद्धार्थ की पत्नी का नाम त्रिशला था। एक समय रात्रि में प्रियकारिणी त्रिशला जब कुण्डलपुर के प्रसिद्ध राजभवन नंद्यावर्त में शान्तचित सो रही थी, तब रात्रि के पिछले प्रहर में उन्होंने सुन्दर सोलह स्वप्न देखे। प्रातः माँ त्रिशला ने राजा सिद्धार्थ को जब उक्त स्वप्न प्रसंग सुनाया और उनका फल जानना चाहा तब निमित्त-शास्त्र के वेत्ता राजा सिद्धार्थ ने पुलकित होकर बताया कि उदर से तीन लोक पर शासन करने वाले धर्मतीर्थ के प्रवर्तक भावी तीर्थंकर बालक का जन्म होगा। पुरजनों और परिजनों की आनन्दमयी चिर-प्रतीक्षा के बाद चैत्र शुक्ला त्रयोदशी का शुभ दिन आया। जिस प्रकार प्रभात की पवित्र वेला में पूर्व दिशा सूर्य को जन्म देती है, उसी प्रकार ममतामयी माता त्रिशला ने उगते हुए सूर्य-सी स्वर्णाभा से युक्त तेजस्वी बालक को जन्म दिया। नित्य वृद्धिंगत देख उनका सार्थक नाम वर्द्धमान रखा गया। बालक वर्द्धमान जन्म से ही स्वस्थ, सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाले थे। वे आत्मज्ञानी, विचारवान, विवेकी और निर्भीक बालक थे। अतः उन्हें बचपन से ही वीर, अतिवीर कहा जाने लगा था। आत्मज्ञानी होने से उन्हें सन्मति भी कहा गया। उनके पाँच नाम प्रसिद्ध हैं - वर्द्धमान, वीर, अतिवीर, सन्मति और महावीर।

दुनियां के मायावी क्रियाकलापों ने राजकुमार वर्द्धमान को अपने रंग से रंगना चाहा पर आत्मा के रंग में स्वांग सराबोर वर्द्धमान पर दुनियां का रंग न चढ़ा। जवानी ने अपने रागयुक्त पासे फैंके, किन्तु वे भी दाँव खाली गये। माता-पिता की ममता, माँ के आँसूओं की बाढ़ भी उन्हें रोक न सकी। एक दिन विचार-मग्न महावीर ने अपने सुदूर-पूर्व जीवन में झाँकने का यत्न किया और उन्हें उस समय अपने पूर्व भवों का दर्शन हो गया, उन्हें जाति स्मरण हो गया, उन्हें सब कुछ स्पष्ट गया। उन्हें संसार से विरक्ति हो गयी। घर-बार छोड़कर नग्न दिगम्बर हो पूर्ण आत्माराधना का उन्होंने दृढ़ निश्चय कर लिया।

प्रभु वर्द्धमान का राग सब से छूट चुका था, अतः उनके सब वेष छूट गये थे। सब वेष तो श्रम साध्य हैं, धारण करने रूप हैं, उनमें गाँठ बाँधना अनिवार्य है। साधुता बंधन नहीं है, उसमें सर्वबन्धनों की अस्वीकृति है। दिगम्बर कोई वेष नहीं है, सम्प्रदाय नहीं है, वस्तु का स्वरूप है।

तीर्थंकर भगवान महावीर का सम्पूर्ण भारतवर्ष में लगभग तीस वर्ष तक धर्मोपदेश व विहार होता रहा। उनके विहार की अधिकता के कारण भारत का एक बहुत बड़ा भू-भाग ही "बिहार" के नाम से जाना जाने लगा। उनके उपदेशों के प्रभाव से समस्त देश का वातावरण अहिंसामय हो गया। धर्म के नाम पर चलने वाली हिंसा, बाह्याडम्बर और पाखण्ड खण्ड-खण्ड हो गए। उनके उपदेश को दिव्य-ध्वनि की संज्ञा दी जाती है। तीर्थंकर महावीर ने जीवन को पवित्र, सच्चरित्र एवं सुखी बनाने के लिए अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह - ये पाँच महान् आदर्श पाँच महाव्रतों के रूप में लोक के सामने प्रस्तुत किए। इन महान् आदर्शों के पालन पर आक्षेप लगाया जाता है कि ये इतने सूक्ष्म एवं कठोर हैं कि इनका प्रयोग व्यावहारिक जीवन में संभव नहीं हैं। यद्यपि यह सत्य है कि भगवान महावीर ने हिंसादि पापों का रंचमात्र भी सद्भाव श्रेयस्कर नहीं माना है, तथापि उनको जीवन में उतारने से लिए अनेक स्तरों का प्रतिपादन किया है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में पाप छोडना व अणुव्रत अपनाना संभव ही नहीं, वरन् प्रयोगसिद्ध है।

भगवान महावीर ने समीचीन धर्म के बारे में बताया कि धर्म का अर्थ है जो हमारी अन्तरात्मा को जगाये, जो जीवन में सदाचार, प्रेम, मैत्री और अहिंसा को लाये। जो जीवन को उत्थान की ओर ले जाये, परमात्मा की ओर ले जाये उसका नाम ही धर्म है। धर्म एक ऐसा तत्व है जो दुःख और सुख से मुक्त करके जीवन में परम आनन्द से मिलाता है। संसार से अतीत कराने वाले तत्व का नाम है धर्म, अव्यवस्थित जीवन को व्यवस्थित करने वाले तत्व का नाम है धर्म, जीवन की बगिया में परमात्मा के फूल खिलाने वाले माली का नाम है धर्म। धर्म प्रयोग है, मात्र विचार नहीं। धर्म अनुभूति है, मात्र चिन्तन नहीं। धर्म दर्शन है, प्रदर्शन नहीं। धर्म अहिंसामय आचरण है, मात्र वाचनिक नहीं। जब तक हमारा जीवन आचरणमय, अहिंसामय नहीं होगा। तब तक धर्म की अनुभूति संभव नहीं होगी।

भगवान महावीर कहते हैं कि न कोई मुसलमान है, न कोई ईसाई है, न कोई बुद्ध है और न कोई जैन है। आत्मा का स्वभाव मात्र देखना और जानना है, लेकिन जिस सम्प्रदाय में मनुष्य पलता है, मान्यताओं को वह पकड़ लेता है और एक-दूसरे से लड़ता है कि तुम्हारा धर्म गलत है, मेरा धर्म सच्चा है। भगवान महावीर कहते हैं कि परम अहिंसक हो जाओ फिर देखो-कौन गलत है, कौन सही है। उस समय गलत और सही नजर आएगा। फिर तेरे-मेरे के सारे उपद्रव अपने आप ही शान्त हो जाएंगे। धार्मिक असहिष्णुता से भी विश्व में बहुत कलह और रक्तपात हुआ है, इतिहास इसका साक्षी है। जब-जब धार्मिक आग्रह सहिष्णुता की सीमा को लाँघ जाता है, तब-तब वह अपने प्रचार व प्रसार के लिए हिंसा का आश्रय लेने लगता है। धर्म का यह दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि उसके नाम पर रक्तपात हुए।

इस प्रकार जिस धर्म तत्व के प्रचार के लिए हिंसा अपनाई गई, वही हिंसा उसके ह्रास का कारण बनी। किसी का मन तलवार की धार से नहीं पलटा जा सकता। अज्ञान ज्ञान से कटता है, उसे हमने तलवार से काटने का यत्न किया। भगवान महावीर ने उक्त तथ्य को समझाते हुए साध्य और साधन की पवित्रता पर पूरा-पूरा जोर दिया अर्थात् धर्म और सम्प्रदाय की व्याख्या इस प्रकार की कि सम्प्रदाय धर्म की अभिव्यक्ति के साधन हैं, स्वयं धर्म नहीं है। वे धर्म के शरीर हैं, धर्म की आत्मा नहीं। सम्प्रदाय बनते भी हैं और मिटते भी हैं। क्योंकि जिसका जन्म होता है, स्वाभाविक

है कि उसकी मृत्यु भी हो जाती है। जिसका जन्म नहीं होता वही मात्र शाश्वत हो सकता है। धर्म अजन्मा है इसलिए शाश्वत है। जो जीवित है, शाश्वत है उससे मनुष्य बहुत दूर है तथा मृत सम्प्रदायों के बोझों को पीठ पर रख कर ढ़ो रहा है। उन सम्प्रदायों का बोझ उसे निर्भीक और निर्दोष नहीं होने देता। पूर्वाग्रह का विष धर्मामृत को भी दूषित कर देता है। सम्प्रदायों के भार से भरे व्यक्ति को धर्म उपलब्ध नहीं होता। विषय-कषाय का चश्मा अन्तस् के सौंदर्य को देखने नहीं देता। धर्म का जीवन में जब स्पर्श होता है, धर्म का आत्मा में जब जागरण होता है तब वैसे ही सब बदल जाता है जैसे प्रातः सूर्य के उदित होने पर अन्धकार विलीन हो जाता है। अगर किसी में धर्म का प्रस्फुटन होगा तो ही उसके अन्दर से पूर्वाग्रह का, काम-क्रोध, लोभ-मोह का अंधकार तिरोहित होगा। सम्प्रति में मनुष्य का सम्बन्ध धर्म से तो छूट गया और सम्प्रदायों से गहरा सम्बन्ध बन गया है। मनुष्य की चेतना में सम्प्रदाय का अन्धकार व्याप्त है। जब तक वह उससे मुक्त नहीं होगा तब तक उसे धर्म की उपलब्धि असंभव है। धर्म तो मन को जीतने का श्रेष्ठतम उपाय है और उस धर्म का नाम है परम अहिंसामय धर्म। यही कारण है कि भगवान महावीर बात की तह में जाकर कहते हैं कि यदि हिंसा को रोकना है तो उसे आत्मा और मन के स्तर पर ही रोकना होगा; क्योंकि यदि आत्मा के, मन के स्तर पर हिंसा उप्तन्न हो गई तो वह वाणी और काया के स्तर पर भी प्रस्फुटित होगी ही। अर्थात् जब-तक लोगों के दिल साफ नहीं होंगे, जब तक लोगों की आत्मा में निर्मलता नहीं होगी, तब-तक हिंसा के अविरल प्रवाह को रोकना संभव न होगा। आत्मा और मन के स्तरों पर हिंसा रोकने की इसी विशेषता के कारण कहा जाता है कि अन्य दर्शनों की अहिंसा जहाँ समाप्त होती है, जैन दर्शन की अहिंसा वहाँ से आरम्भ होती है। हिंसा और अहिंसा की जैसी सूक्ष्म व्याख्या भगवान महावीर ने की है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। वे कहते हैं -

अप्रादुर्भावः खलु रागादीनां भवत्यहिंसेति।
तेषामेवोत्पत्तिः हिंसेति जिनागमस्य संक्षेपः।।

आत्मा में मोह-राग-द्वेष भावों की उत्पत्ति नहीं होना अहिंसा है और उनकी उत्पत्ति होना ही हिंसा है। आत्म-शुद्धि के लिए मोह-राग-द्वेष रूप भाव-हिंसा का त्याग आवश्यक है।

भगवान महावीर ने स्वतंत्रता और समानता के सिद्धान्त को भी प्रतिपादित किया। उन्होंने जन्म-मूलक वर्ण-व्यवस्था का विरोध करते हुए कहा कि जन्म से ही छोटे-बड़े का भेद करना भी हिंसात्मक आचरण है। यदि आज महावीर भगवान के सिद्धान्तों, उपदेशों को जीवन का अंग बना लिया जावे तो हम आत्म शान्ति के साथ-साथ विश्व शान्ति की दिशा में भी सहज ही अग्रसर हो सकते हैं।

आर्यश जैन

हितेशी जैन

उत्तरा जैन

लेख

निर्वाण यात्रा

- ब्र.प्रीति दीदी पुजारी खनियाँधाना

धन्य है वह कार्तिक कृष्ण अमावस्या की तिथि ... जिस दिवस में शेर के भव से शुरू हुई मोक्ष मार्ग की यात्रा महावीर बनकर पूर्ण हुई।

वीर निर्वाण उत्सव क्या है ? यूं तो इस तिथि से जुड़े कई पर्व है जिनकी अपनी-अपनी मान्यता है अपना-अपना प्रयोजन है पर हमें विचार तो करना पड़ेगा कि यह पर्व हम मनाते क्यों हैं?

पर्व का प्रयोजन भगवान के प्रति भक्ति है? अपने वैभव विलासिता का प्रदर्शन है? हंसी-खुशी मनोरंजन है? या सिर्फ रुड़ी है, परंपरा है ? विचार तो करना पड़ेगा क्योंकि हम मनुष्य बुद्धिजीवी वर्ग में आते हैं, हमारे में सोचने-विचारने की सामर्थ्य है, हम किसी भी रुड़ी विशेष का अंधानुकरण करके उसके प्रयोजन का विचार किए बिना कार्य करें यह हमारे हित में नहीं है।

हम इस पर्व पर लक्ष्मी जी की पूजन करते हैं -

ठीक है... पर साथ में यह भी विचार करें कि वास्तव में लक्ष्मी कौन है? कैसे प्रगट होती है? हमने धन को लक्ष्मी मान कर रखा है। यदि लक्ष्मी जी की पूजन से धन की प्राप्ति होती तो फिर दुनियां में कोई गरीब ही नहीं होता.. पर ऐसा तो संभव ही नहीं है। फिर कौन-सी लक्ष्मी है, जो हमें प्रकट करना है ? वह है केवलज्ञानरूपी लक्ष्मी.....

जिसके प्रकट होने पर तीन लोक की सारी संपदा मिलती है और जीवन सहज और शांत हो जाता है।

हम पर्व को दीपक जलाकर मनाते हैं... आपके अनुसार अच्छा है... पर दीपक से हम अपना घर द्वार रौशन करना चाहते हैं ? अपनी अंतरंग परिणति को रौशन करना चाहते हैं ? या फिर किसी परंपरा के अनुसार यह कार्य कर रहे हैं? यदि इनसे हमारी पाप और कषायें का नाश हो तो हमारा पर्व मनाना सार्थक हो।

बिना पटाखा दिवाली कैसी?

हजारों रुपए के पटाखे राख कर देने में हमें लगता है इस बार हमने बहुत उत्साह से दिवाली मनाई है, अभी-तक आपकी यह मान्यता थी... पर सोचो पटाखों की आवाज से, उसकी अग्नि से, कुत्ते, बिल्ली, छोटे जानवर, जो भय से अपनी जान गंवा देते हैं। कई पशुओं के गर्भ गिर जाते है। हमारे भगवान का उपदेश तो यह नहीं है... उनकी तो शिक्षा है कि "सभी आत्माएं बराबर है, कोई छोटा-बड़ा नहीं है" सभी जीवो के अंदर भगवान बनने की शक्ति है... एक भगवान दूसरे भगवान की हिंसा करके भगवान की भक्ति करे... यह कहां तक उचित है ?

दिवाली आई...चारों तरफ मिठाई ही मिठाई...

पर्व पर किसी के घर जाएं और मुंह मीठा न हो यह तो असंभव-सा लगता है... पर भाई अपने देश में इतना दूध और माबा है जो इस मिठाई की पूर्ति कर सके? इसका मतलब हम मिलावटी मिठाई खाकर रोगों को आमंत्रण दे रहे हैं... मेरा उद्देश्य मिठाई न खाई जाए यह नहीं है, मिठाई कैसी है ? कहां बनी ? किस चीज से बनी है ? इन सारे बिंदुओं पर विचार करके ग्रहण की जाए तो हम स्वस्थ रहकर पर्व को उत्साह पूर्वक मना सकते हैं।

हमने पर्व के नाम पर घर के सारे जानवर, वही खाते, मकान, दुकान, सबकी पूजन की।

क्यों? क्योंकि सब सुरक्षित बने रहें इसीलिए....

तो सिर्फ एक दिन ही क्यों? उन्हें तो हमें सदा सुरक्षित रखना है.. फिर तो हमें उनकी हमेशा ही पूजन करना चाहिए घर के जो पालतू जानवर हैं उन्हें उनके अनुसार भोजन देना, उनकी सेवा यही तो हमारा उद्देश्य है, तो यह एक दिन में पूरा नहीं होता। हमारी पाप करके आनंद मनाने की जो बुद्धि है उसका अभाव अवश्य होना आवश्यक है।

इन पर्वों पर हम कब से यह सारे काम कर रहे हैं अब समय है अपने ही हृदय से पूछने का कि पिछले ५० सालों में हमें कितना लाभ हुआ ? और यदि यह सब हम नहीं करेंगे तो हमें क्या नुकसान होगा? वास्तविकता तो यह है कि हानि-लाभ कोई क्रियाओं से नहीं होता...हमारे मन मस्तिष्क में जो अच्छे परिणाम होते हैं उनसे अच्छा होता है और बुरे परिणामों से बुरा होता है यदि हम वास्तव में सुखी होना चाहते हैं तो हमें इस संसार का अभाव करना होगा और भगवान के बताये हुए मार्ग पर ही चलना होगा।

अतः हम सब ऐसी पवित्र भावना भाएं किः-

"जिस पंथ चले भगवंत वही आ चरिए"

भगवान ने तो हमें एक ही उपदेश दिया है कि ऐसा काम करो जिससे बोधिलाभ हो, सुगति गमन हो और अनंत उत्तम गुणों की संपत्ति मिले....

विचारना...

महावीर भगवान की 11 शिक्षाएँ

01. सभी आत्मायें बराबर हैं, कोई छोटा-बड़ा नहीं है।
02. भगवान कोई अलग नहीं होते। जो जीव पुरुषार्थ करे, वही भगवान बन सकता है।
03. भगवान जगत की किसी भी वस्तु का कुछ कर्त्ता-हर्त्ता नहीं है, मात्र जानता ही है।
04. हमारी आत्मा का स्वभाव भी जानना-देखना है, कषाय आदि करना नहीं है।
05. कभी किसी का दिल दुःखाने का भाव मत करो।
06. झूठ बोलना और झूठ बोलने का भाव करना पाप है।
07. चोरी करना और चोरी करने का भाव करना बुरा काम है।
08. संयम से रहो, क्रोध से दूर रहो और अभिमानी न बनो।
09. छल-कपट करना और भावों में कुटिलता रखना बहुत बुरी बात है।
10. लोभी व्यक्ति सदा दुःखी रहता है।
11. हम अपनी ही गलती से दुःखी हैं और अपनी भूल सुधार कर सुखी हो सकते हैं।

लेख

निर्वाण लाडू का स्वरूप

- पं. सतीश शास्त्री, बाँसवाड़ा
(अधीक्षक : रत्नत्रय तीर्थ, ध्रुवधाम, बांसवाडा)

भारत के सबसे बड़े और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण त्यौहारों में से एक है दीपावली। इस पर्व को अलग-अलग धर्म-संप्रदाय के लोग, अलग-अलग कारणों से, अलग-अलग तरीके से मनाते हैं। सांप्रत प्रकरण में हमारा वर्ण्य विषय-कौन? किसलिये? और किसतरह? दीपावली मनाता है कि अपेक्षा जैनो में भगवान महावीर स्वामी के निर्वाणोत्सव के उपलक्ष्य में मनायी जा रही दीपावली के अवसर पर निर्वाण लाडू क्यों चढ़ाया जाता है? और उसका क्या स्वरूप होना चाहिए? इसका चिंतन प्रसंग प्राप्त है।

यद्यपि 'निर्वाण लाडू' के संबंध में प्रत्यक्षरूप से कोई आगमप्रमाण दृष्टिगत नहीं होता तथापि कई वर्षों से चली आ रही इस लोक पंरपरा ने महावीर स्वामी के निर्वाणोत्सव प्रसंग पर एक अनिवार्य क्रिया का रूप धारण किया है।

निर्वाण लाडू का उद्देश्य :-

निर्वाण लाडू और भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण का प्रत्यक्ष कोई संबंध दृष्टिगोचर नहीं होता। अतः यह प्रतीकात्मकता/संकेतात्मकता की ओर हमें इंगित करता है।

भगवान महावीर स्वामी को कार्तिक कृष्ण चर्तुदशी दीपावली के दिन प्रातः निर्वाण की प्राप्ति हुई और वे सिद्धशिला पर विराजमान हुए। वह सिद्धशिला स्फटिकमणि के समान शुभ्र-धवल श्वेत रंग की, अकृत्रिम, असहाय मिलावट रहित उत्तमानंद प्राप्ति के फलस्वरूप है। प्रत्येक मुमुक्षुओं को इस पूर्णानंद प्राप्ति का लक्ष्य, उनके समान सिद्धशिला पर विराजमान होने का भाव रहता है और इसी के फलस्वरूप प्रतीकात्मकरूप में निर्वाण लाडू चढ़ाने की यह परंपरा जिनाम्नाय में प्रवर्तमान हुई। जिस प्रकार रागियों को लाडू को देखनेमात्र से सिद्धशिला का स्मरण हो और वह आत्मरस चखने में प्रवृत्ति करता है।

निर्वाण लाडू का स्वरूप :-

शास्त्रों में सिद्धशिला का अनेक प्रकार से वर्णन मिलता है जिसमें मुख्यरूप से तीन गुण यहाँ विशेष उल्लेखनीय है-

1 स्फटिकमणि के समान श्वेत-शुभ्र-धवल वर्ण

2 सम्पूर्णानंद प्राप्ति का प्रतीक

3 अकृत्रिमता

अतः उसका प्रतीक 'निर्वाण लाडू' भी इन तीन गुणों से युक्त होना चाहिए। लोक में श्वेत-धवल-शुभ्र कई वस्तुएँ हैं जैसे - आटा, नमक, सोडा इत्यादि परंतु इनमें से कोई आंनद की घोतकता से रहित तो कोई अकृत्रिमता से रहित है। आत्मानंद की पराकाष्ठा स्वरूप प्राप्त सिद्धशिला का उच्चस्थान किसी भी प्रकार के मिलावट से रहित है। अतः उसके प्रतीक स्वरूप 'निर्वाण लाडू' भी किसी प्रकार के अनाज की मिलावट से रहित हो तो अच्छा है। यह निर्वाण लाडू अन्य दर्शनों में भगवान को भोग चढ़ाया जाता है जबकि जिनाम्नाय में इस निर्वाण लाडू को किसी

तीर्थंकर विशेष की पूजन में नैवेद्य के छंद में भी चढ़ाया नहीं जाता अपितु मोक्ष कल्याणक के छंद में स्थापित किया जाता है। यहाँ निर्वाण लाडू को स्थापित करने के पीछे का भाव ही यह है कि – "जिसप्रकार समस्त विकारों से रहित होकर आप सिद्धशिला पर स्थानापन्न हुए उसीप्रकार मैं भी शीघ्रातिशीघ्र आपके समान ही वह अवस्था प्राप्त करूँ इसलिये यह 'निर्वाण लाडू' स्थापित करता हूँ।"

कई स्थानों पर मात्र शक्कर का निर्वाण लाडू बनाने का उपदेश दिया जाता है; परंतु प्रतीकात्मकता के उपरोक्त तीन गुणों की कसौटी पर यदि शक्कर को उतारा जाये तो सिद्धशिला के समान श्वेतपना एवं मिठास के कारण आनंद का प्रतीक तो माना जा सकता है फिर भी अकृत्रिमता से दूर ही वह रहेगी। वैसे भी शक्कर की शुद्धता के प्रसंग में कई बार प्रश्नचिन्ह उपस्थित होते रहते हैं। शक्कर बनाने की प्रक्रिया में जीवहिंसा संबंधी सावधानी की अपेक्षा बड़े-बड़े कारखानों से नहीं की जा सकती तथा शुद्धिकरण में भी केमिकल का प्रयोग किया जाता है। एक बात यह भी है कि शक्कर से निर्मित 'निर्वाण लाडू' स्थापित करने के पश्चात् कालान्तर में उस पर चींटी-मकौड़ों जैसे अनेक त्रसजीवों का आगमन एवं साफ-सफाई के समय उनकी विराधना होती नजर आती है। कोई भी परंपरा शुद्धिपूर्वक एवं अहिंसक होनी चाहिए; यदि इन दोनों पूर्वक कार्य न हो रहा हो तो नहीं करना ही बेहतर है। इसप्रकार मात्र शक्कर से निर्मित 'निर्वाण लाडू' भी सिद्धशिला के प्रतीक के रूप में शुद्धता, अकृत्रिमता और अहिंसा की कसौटी पर बुद्धि को सहज स्वीकार्य नहीं होती तो प्रश्न उपस्थित होता है कि आखिर 'निर्वाण लाडू' कैसा हो?

निर्वाण लाडू की वास्तविक स्थापना :-

जिस आत्मस्वभाव का आलंबन लेकर भगवान महावीर स्वामी सिद्धशिला पर स्थापित हुए उस आत्मस्वभाव की झलक आना, ललक लगना ही वास्तव में 'निर्वाण लाडू' स्थापित करना है; परंतु प्राथमिक स्तर पर कम से कम आरंभ व शुद्धता-पवित्रता के प्रतीक को ध्यान में रखते हुए छिला हुआ नारियल को गोला जो शुभ्रता-धवलता, अकृत्रिमता, मधुरता, अहिंसकता आदि गुणों से युक्त है और आत्मा की सर्वोच्च उपलब्धि के फलस्वरूप प्राप्त शुभ्र-धवल, अकृत्रिम सिद्धशिला की प्रतीकात्मकता से मेल खाता हुआ प्रतीत होता है।

न केवल जैन अपितु अन्य अधिकतर धर्मों में नारियल को पवित्र और शुभलक्षण युक्त माना है। अतः प्राकृतिकरूप से सहज प्राप्त नारियल का गोला जिसकी अलग हुई ऊपरी जटायें मानों भगवान महावीर स्वामी के नौकर्म से रहितपने को गोले के ऊपर स्थित कठोर आवरण से रहितपना द्रव्यकर्म से रहितपने को और गोले से चिपककर रहने वाले काले आवरण से रहितपना भावकर्म से रहितपने को दर्शा रही हो। इन तीन आवरणों से रहित शुद्ध नारियल जैसा सुस्वाभाविक अवस्था में 'सवत्थ सुंदर' दिखता है वैसे ही भगवान महावीर स्वामी का जीव भी दीपावली के दिन तीन प्रकार के कर्मावरण से रहित होकर स्वाभाविक निर्मल अवस्था में सिद्धशिला पर स्थापित हुआ है।

इस निर्वाणोत्सव पर 'निर्वाण लाडू' के रूप में श्वेत नारियल का गोला समर्पित कर सिद्धशिलारूपी ध्रुवपद पाने के लिये कृत संकल्प होने में ही वास्तविक दीपावली मनाने की सार्थकता है।

आयुर्वेद

स्वास्थ्य के अहिंसक नुस्खे

- डॉ. दीपक जैन वैद्य, जयपुर

गतांक से आगे...

-: टॉन्सिल :-

- साधारण गर्म पानी में नमक घोलकर दिन में दो बार कुल्ले करने से टॉन्सिल कर सूजन और जंतुसंसर्ग धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है।
- सिकी हुई 1 ग्राम हल्दी और चीनी एक चम्मच लेकर फाँकना, उसके ऊपर गर्म दूध पीने से बढ़ा हुआ टॉन्सिल बैठ जाता है।
- केले के पेड़ की छाल गले के ऊपर (बाहर) बाँधने से टॉन्सिल में फायदा होता है।
- स्फटिक (फिटकरी) तथा सुहागा (टंकण) को समभाग लेकर गरारे करने से टॉन्सिल ठीक होते हैं।

-: दमा-श्वांस :-

- श्वास हुआ हो तो एक पका हुआ केला लेकर उसे कुछ गर्म कर बाद में छीलकर काली मिर्च पावडर (चुटकी भर) डालकर खाने से आराम होता है।
- घी के साथ पीसी हुई हल्दी चाटकर, ऊपर से गर्म दूध पीने से दमा में आराम होता है।
- दो इलायची, चार छुहारे और 15 किशमिश तीनों को पीसकर, तवे पर कुछ सेंककर 250 मिलीग्राम काली मिर्च मिलाकर चासनी में चाटने से दमा मिटता है।
- रोजाना थोड़े खजूर खाकर ऊपर से गर्म पानी पीने पर कफ पतला होकर बाहर निकल जाता है और श्वास मिटता है।
- भोजन के बाद नियमित 1 चम्मच अजवायन गर्म पानी के साथ लेने से श्वास में राहत होती है।
- 2-3 काली मिर्च पीसकर बूरे के साथ रोज चाटने से श्वास मिटती है।
- तुलसी का रस 1 चम्मच और चासनी 1 चम्मच मिलाकर लेने से श्वास की तकलीफ मिटती है।
- 3 ग्राम हल्दी और डेढ़ ग्राम सोंठ को सेंककर गुड़ के साथ सर्दियों के चार महीने तक लेने से श्वांस मिटती है।
- फूली हुई फिटकरी आधा ग्राम और बूरा दो ग्राम लेकर दिन में चार बार फाँकने से दमा मिटता है।

शेष क्रमशः...

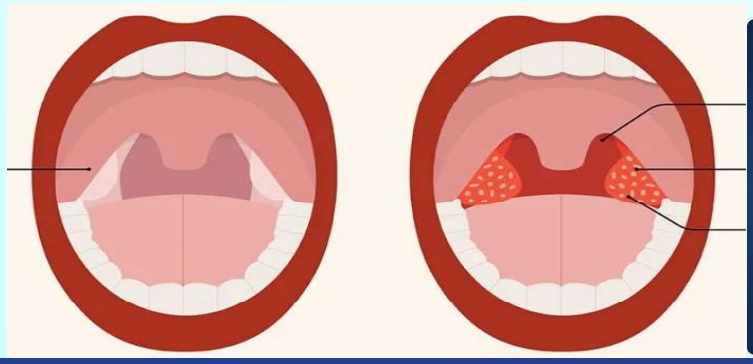

जीवनोपयोगी

परिचारक निर्देश

(अहिंसादि पालन हेतु उपाय)

जीवन पथ दर्शन (ब्र. रवीन्द्र जी 'आत्मन्', अमायन)

गतांक से आगे . . .

अहिंसा के पालन हेतु :-

मोह-राग-द्वेष रूप भाव होना ही भाव हिंसा है और किसी जीव को मारना-सताना या दुःख देना द्रव्य हिंसा है। इनका त्याग ही अहिंसा है।

हिंसा के चार भेद हैं :-

01. संकल्पी हिंसा :- निर्दय परिणाम सहित की जाने वाली हिंसा, संकल्पी हिंसा है।
02. आरंभी हिंसा :- दैनिक चर्या में सावधानी वर्तने पर भी हो जाने वाली हिंसा, आरंभी हिंसा है।
03. उद्योगी हिंसा :- योग्य व्यापार आदि में हो जाने वाली हिंसा, उद्योगी हिंसा है।
04. विरोधी हिंसा :- धर्म-धर्मायतनों, देश आदि की रक्षा में न चाहते हुए भी हो जाने वाली हिंसा, विरोधी हिंसा है।

चारों प्रकार की हिंसा को समझकर :-

01. संकल्पी हिंसा (निर्दय परिणाम सहित मारना) का त्याग करें।
02. आरंभी हिंसा को घटायें, अनावश्यक हिंसा न करें।
03. हिंसा के उद्योगों का त्याग करें, उद्योगी हिंसा को भी घटायें।
04. हिंसात्मक विरोध से बचें। धर्म, धर्मायतन, शील, संयम आदि की रक्षा में भी हो जाने वाली हिंसा को हर्ष पूर्वक न करें ?
05. किसी का बुरा न विचारें। विपरीत आचरण करने वाले का एवं स्वयं का उदय विचार कर समता ही रखें, मंगल कामना ही करें।
06. क्रूरता, कठोरता, कुटिलता, ईर्ष्या, तृष्णा, आसक्ति को प्रयत्न पूर्वक छोड़ें।
07. अल्प एवं प्रयोजनभूत एवं प्रामाणिक जानकारी पूर्वक ही सत्य बोलें।
08. अभक्ष्य-भक्षण न करें। सात्त्विक एवं मर्यादित भोजन करें। शोधन-क्रिया सावधानी पूर्वक करें।
09. विवेक जाग्रत रखें, यत्नाचार का पालन करें। प्रवृत्ति को सीमित करें। सादगी, शील एवं संतोष पूर्वक रहें।
10. पाँचों ही पाप हिंसामय है; अतः अहिंसा पालने हेतु सर्व त्याज्य हैं।

11. कषायों की तीव्रता में पापरूप प्रवृत्ति होती है; अतः कषायों के वश कदापि न हों।
12. सत्संगति में रहें एवं ज्ञानाभ्यास करें।
13. अपव्यय किसी वस्तु (जल, बिजली आदि) का न करें।
14. अतिभारारोपण कहीं न करें। मजदूरों, कर्मचारियों आदि का शोषण न करें।

अहिंसा में न कायरता है और न क्रूरता।

सत्य के पालन हेतु :-

01. चाहे किसी से कुछ भी सुनकर या कहीं से भी कुछ भी पढ़कर वैसा ही न समझें, न कहें।
02. प्रामाणिक जानकारी एवं निर्णय करने की आदत ही बना लेवें।
03. धैर्य रखें, जल्दी से कुछ भी कहने की आदत छोड़ें।
04. बोलने से पहले सूक्ष्मता से विचारें कि इन वचनों से हिंसादि पापों का पोषण तो नहीं होगा। कही कलह तो नहीं होगा, किसी की हानि तो नहीं होगी।
05. बिना सही जानकारी के किसी के पूछने पर भी चाहे जो न बताने लगें। स्पष्ट कह दें कि हमें ज्ञान नहीं है।
06. क्रोध अभिमानादि के वश होकर निंद्य, कठोर, सावद्य (पापों और कुव्यसनो में प्रवर्ताने वाले) वचन न बोलें।
07. सदैव हितकारी, कम और मधुर वचन बोलें। बहाने न बनाऐं, स्पष्ट बोलें।

अचौर्य के पालन हेतु :-

01. किसी के अधिकार को हनन न करें।
02. अपने कर्त्तव्य पालन में आलस्य, अविवेक या अयत्नाचार न करें।
03. अपने काम को दूसरों पर न डालें।
04. काम करने से जी न चुराऐं, उत्साह एवं निष्ठापूर्वक कार्य करें।
05. कार्य दूसरों से कराके, स्वयं श्रेय लेने का प्रयत्न न करें।
06. दूसरों की वस्तु को देखकर न ललचायें। बिना पूछे न लेवें, छीनें या छिपाकर तो कदापि न लें।
07. बिना मूल्य या अत्यल्प मूल्य में किसी वस्तु को न चाहें।
08. भाग्य एवं श्रम पर विश्वास रखें, संतोषी बनें।
09. सर्वत्र नियमों का पालन जागरूकता पूर्वक करें।

10. कहीं कोई भूली हुई या गिरी हुई कोई वस्तु मिले तो प्रथम तो उसे उठायें ही नहीं या उसके स्वामी को पहुँचाने का प्रयास करें या अधिकृत स्थान पर जमा कराऐं।

शील के पालन हेतु :-

01. पत्नी के अतिरिक्त दूसरी महिलाओं एवं कन्याओं के प्रति माता, बहिन, पुत्री समान व्यवहार करें।
02. वेशभूषा, सादा एवं पदयोग्य निश्चित पहनें। अयोग्य वस्त्र न पहनें।
03. एकान्त सहवास अयोग्य चर्चा से बचें।
04. अश्लील फिल्में एवं साहित्य को त्यागें।
05. रात्रिकालीन कार्यक्रमों एवं यात्रा में अति सावधान रहें।
06. हँसी-मजाक न करें। प्रसन्नता एवं शिष्टता पर्याप्त हो।
07. सहानुभूति एवं सहयोग में विवेक रखें।
08. शील समस्त आभूषणों में प्रधान है।
09. किसी का अति विश्वास करके, अपनी मर्यादा का उल्लंघन न करें।
10. परिचितों एवं गुरुजनों में भी मर्यादा बनाये रखें।

संतोष के पालन हेतु (परिग्रह-परिमाण) :-

01. अपनी शक्ति, परिस्थिति एवं परिणामों को समझकर अपने भोगोपभोग की समस्त सामग्री का अल्प-अल्प समय के लिये परिमाण (सीमा) करते रहें।
02. सीमा करने में भावुकता न करें, जिससे बाद में आकुलता न होवे। विचारपूर्वक स्पष्ट लिखितरूप में नियम लें। आजीवन त्याग एकदम न करें।
03. स्वर्ण, चाँदी आदि के आभूषणों का उपयोग न करें, तो अच्छा ही है।
04. नकली आभूषण भी विशेष न पहनें। उनके कारण सामने वाले की नीयत तो बिगड़ ही सकती है और आपके साथ दुर्व्यवहार होने की संभावना तो है ही।
05. अनावश्यक संग्रह न करें, आवश्यकतानुसार लेते रहें, उपयोग के बाद हटाते रहें।
06. दूसरों से न ईर्ष्या करें और न उनका अन्धानुकरण करें।
07. सादगी एवं परोपकारी वृत्ति बनायें।
08. जमीन, दुकान, मकान, व्यापार आदि की भी सीमा करें।
09. अतिभोजन की भाँति अतिपरिग्रह भी संक्लेश का कारण है।

लेख

भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांतों की वर्तमान में उपयोगिता

- डॉ. रेखा जैन, टीकमगढ़

भगवान महावीर का जीवन चिंतन की सर्वोच्च अवस्था है। आप स्वप्रज्ञा के धनी, सम्यक् स्वरूप के जागृत नक्षत्र, मानवता के सृजन कर्ता, समदर्शी, सकल तत्व ज्ञाता, आत्मोन्मुखी, आनंद के खजाने रहे हैं। जिन्होंने गणतंत्र के दिव्य स्वरूप को दिया है। सब की स्वतंत्रता, समविभागता, स्वामित्वपन से रहित, वंशवाद और पंथवाद की दुर्बुद्धि से रहित, समन्वय की दूरदर्शिता, अभिव्यक्ति की विराटता से संपन्न रहे हैं। भगवान महावीर की निर्णय क्षमता पारदर्शी सर्वहितकारी सह अस्तित्व से सहित रही है, जिसमें मानवीय व्यवहार की समस्त अच्छाईयां निहित हैं।

भगवान महावीर स्वामी के जीवन दर्शन में भागने का उपक्रम नहीं है बल्कि ठहर कर शांत भाव से चिंतन की प्रेरणा है। जहां पूर्वाग्रह से रहित होकर मानसिक शांति के प्रति लगन, सकारात्मक दृष्टि और आत्मिक स्वभाव के प्रति तटस्थता की अभिव्यक्ति है।

भगवान महावीर निजी जीवन के प्रति भावुक नहीं थे, अपितु सत्यासत्य के चिंतन में निर्मल, सरल, सजल सरिता के बहाव रूप शांत चिंतन की सम्यक् शुचिता के अग्रगण्य थे। जिन्होंने अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, अचौर्य, सत्य, ब्रह्मचर्य, स्याद्वाद, अनेकांत आदि सिद्धांतों का प्रणयन कर जियो और जीने दो, पाप से घृणा करो पापी से नहीं, परस्पर उपकार की प्रेरणा, जीव रक्खाणं, दया धर्म का उपदेश दिया।

अहिंसा :-

मानसिक चिंतन की विपरीत अवधारणा आर्त, रौद्र ध्यान से परिपूर्ण करती है । जहां निज कषाय से हानि और पर के प्रति बिगाड़ करने का उपक्रम होता है। उससे बचने का नाम ही अहिंसा है। वस्तु, द्रव्य, पदार्थ सत् हैं। सत् यानि शाश्वत् है। जीव पुद्गल आदि द्रव्य व्यवस्था समभाव दृष्टि प्रदान करते हैं। आत्म साक्षात्कार का चिंतन संपूर्ण दृष्टि में जड़ चेतन के प्रति समभाव भरता है। जहां सब के अधिकारों का भान होता है। जिसमें मिटने या मिटाने की परिपाटी नहीं होती अपितु बनने और बनाने का भाव रहता है। जियो और जीने दो की अवधारणा निहित रहती है। अहिंसा एक अलौकिक दिव्य शास्त्र है जिससे विश्व शांति, संविभागता और सार्वभौमिक भावना का विकास होता है।

जो तुझे लगता बुरा, न पर से वह व्यवहार कर।
यह अहिंसा का तकाजा सर्प से भी प्यार कर।।

अहिंसा मानवीय संवेदना की आधारशिला है। जिसमें प्राणी हित समाहित रहता है और शिवत्व साधना का भव्य महल खड़ा होता है।

भगवान महावीर स्वामी का चिंतन विश्व पर्यावरण से मैत्री उत्पन्न करने का रहा है। त्रस-स्थावर रूप जीवों की व्याख्या से युक्त जल जमीन जंगल वायु पावक में जीव तत्व की व्याख्या उनके संरक्षण के प्रति चेतना जागृत कर

विश्व पर्यावरण को अहिंसा में समाहित किया। अनर्थ दंड से बचना, अपव्यय ना करना उनके प्रति सद्भावना रखना अहिंसा की सूक्ष्म अवधारणा है।

प्राणी हित अहिंसा का सबसे बड़ा अभियान है जिसमें स्वहित के साथ परहित का संचालन होता है। जीव दया, करुणा, सह अस्तित्व, संरक्षा, संवर्धन, समवरण और संवेदना अहिंसा के उपक्रम हैं । जहां परस्पर प्रेम भाव जागृत होता है। वर्तमान समय की आवश्यकता वैचारिक अहिंसा, जीव तत्व के प्रति आस्था, साधर्मी वात्सल्य, प्राणी हित और शांति का अनुसंधान है, जो अहिंसा से ही संभव है।

आज से ढाई हजार साल पहले महावीर स्वामी ने सर्वहित स्वरूपी अहिंसा सिद्धांत को स्थापित कर शांति से जीने की राह जियो और जीने दो की दी थी।

"पल-पल जीवन उन्नत हो, फिर हित से सहित रहे सदा।
नहीं सतावे किसी जीव को हिंसा के ना हो भाव कदा।।"

भगवान महावीर स्वामी ने व्यक्ति सत्ता का सिद्धांत देकर उनके सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र से परिपूर्ण होने के निर्देश दिए हैं, जो बंदे तद् गुण लब्ध्ये, (तत्वार्थ सूत्र) से परिपूर्ण करता है। जो स्वयं में स्वयं की मित्रता से युक्त करती है। (पुरीसा तुममेव तुमं मित्तं किं बहिया मित्तमिच्छसि)

वस्तु स्वरूप सम्यक् समझ "ही" की दृढ़ता को दूर कर "भी" की मान्यता की नमनीयता की ओर ले जाती है, जो दूसरों को महत्व देना सिखलाती है। यही सबसे बड़ी अहिंसा है। जो वीरत्व भाव से संपन्न करती है। उन्माद अहंकार से भी हिंसा होती है। प्रमत्त योगात् प्राण व्यपरोपणं हिंसा {तत्वार्थ सूत्र} होती है। जो प्रमाद के वशीभूत होती है। हिंसा चाहे किसी भी प्रकार की हो उसमें भाव की प्रधानता होती है। काम क्रोध लोभ अहंकार घृणा ईर्ष्या द्वेष हिंसा के बीज हैं। जिनसे दूर रहने का उपदेश भगवान महावीर स्वामी ने दया प्रेम करुणा समता समन्वय समानता समभाव और सत्कार से दिया है।

अहिंसा एक करुणार्द्र सक्रिय रचनात्मकता है। जिससे विकास होता है। विनाश से बचा जाता है। इस जग में विकसित करें,

भाव अहिंसा धार। हो सब जीवों से मित्रता, आतम हित का सार।।

अपरिग्रह :-

भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांत व्यावहारिक जीवन की प्रतिष्ठा तो करते ही हैं साथ ही आध्यात्मिक संस्कारों का सृजन भी करते हैं।जीवन जीने का सम्यक् भाव आत्मिक संचेतना का आधार है।

जहां से अनासक्ति भाव ब्रह्मचारी साधना समत्व चेतना और समन्वय की उपासना होती है।

सत्य :-

विश्व छह द्रव्य का समूह है जो स्वातः ही बना है जीव तत्व, पुद्गल आदि द्रव्य से पृथक है। जो सम्यक बोध कराता है। इस लोक में प्रत्येक जीव स्व अपेक्षा से निज स्वभाव से भगवत शक्ति संपन्न है। अतः छोटे बड़े का

व्यवहार नहीं हैं। इस सत्य दृष्टि से ही शांति सद्भाव संभव है।

ब्रह्मचर्य :-

निज में स्वभाव की लीनता ब्रह्मचर्य है। जो पर के प्रति विकारी भाव को नष्ट करता है। यह आत्मलीनता आनंद को करने वाली है। जहां वीतरागता का संचार होता है।

अचौर्य :-

द्रव्य का अपहरण या हेरा फेरी से बचना ही अचौर्य है। यह जीवन को पारदर्शी बनाता है। हम कह सकते हैं की वर्तमान समय में भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांतों की उपयोगिता है। यह सम्यक् दृष्टि के साथ-साथ सम्यक् ज्ञान और सम्यक् आचरण से संयुक्त करते हैं।

सम्यक भाव का समन्वय आत्मा को परिपूर्ण करता है, जिससे मानवता का विकास, सद्भावना की दृष्टि, प्रत्येक जीव तत्व शक्ति के प्रति दया, करुणा प्रेम, अपनत्व, आदर और स्नेह उत्पन्न होता है। परस्पर सहयोग करने की भावना का विकास भी होता है।

महावीर स्वामी का चिंतन कर्मकांड से रहित था। स्वभाव दृष्टि की ओर रहा है जिससे शांति संभव और शिव तत्व की प्राप्ति हो संभव है आइए हम सब महावीर के सिद्धांतों को आत्मसात करके विश्व शांति की अलख जगाए।

महावीर की दिव्य देशना हरती सबकी पीर।
पालन करें सिद्धांत का, तो कटे कर्म जंजीर।।

नव प्रसूत प्रतियोगिता क्र :-15 के उत्तर

१ अ	वि	२ रा	३ म		४ मा	५ त्रि	६ क	
त		७ त	रा	८ जू		९ पि	त	१० र
११ ए	१२ क		१३ ठा	ठ	१४ बा	ट		म
१५ व	र्ण	न		१६ न	ई	क	१७ वि	ता
	फू		१८ नि		स		द्यो	
१९ ज	ल	२० वि	हा	२१ र		२२ उ	त्त	२३ म
न		२४ त	ल	वा	२५ र		२६ मा	न
२७ क	२८ स	र		२९ ना	ट	३० क		ची
	३१ च	ण	क		३२ ना	म	प	ता

अनमोल बात

वीर और कायर

जरा शान्ति हो। प्रतिकूलता में तेरी परीक्षा है। अनुकूलता में सभी शान्त रहते हैं, प्रसन्न रहते हैं, परन्तु प्रतिकूलता में शान्ति रखना ही बहादुरी का काम है। अनुकूलता में जैसे चैन से सोते हैं और प्रत्येक कार्य को मन, वचन और काया से तन्मय होकर करते हैं, उसी प्रकार प्रतिकूलता में भी रहना चाहिये। वीर प्रतिकूलता से प्रेम करता है, कायर उसके सामने सिर पर हाथ देकर बैठ जाता है। वीर पुरुषों के लिए अनुकूलता और प्रतिकूलता एक समान होती है। कायर प्रतिकूलता से भयभीत होते हैं और वीर प्रतिकूलता से भयभीत होते हैं और वीर प्रतिकूलता को ही अनुकूलता में परिवर्तित कर देते हैं।

लेख

सच्चे अर्थों में वीर निर्वाणोत्सव

- पं. शुभम शास्त्री, ज्ञानोदय

भगवान महावीर के निर्वाण एवं इन्द्रभूति गौतम गणधर के केवलज्ञान के उत्सव के रूप में दीपावली का पर्व सम्पूर्ण भारतवर्ष में अत्यधिक उत्साह एवं गौरव के साथ मनाया जाता है। भारत देश धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है, यहाँ रहने वाले प्रत्येक नागरिक को अपनी-अपनी आस्था के अनुसार धर्मपालन करने की आजादी है। वह सभी अपने-अपने इष्ट आराध्य की उपासना में धार्मिक पर्व मनाते हैं। दीपावली न केवल जैनों का बल्कि अन्य धर्मावलंबियों की अलग-अलग श्रद्धा से जुड़ा है। हिन्दु श्रीराम चन्द्र जी के अयोध्या आगमन, पाण्डवों की वनवास से वापसी, लक्ष्मी के जन्मदिन, श्रीकृष्ण के द्वारा नरकासुर वध, श्रीविष्णुजी के नृसिंह अवतार में हिरण्यकश्यप के वध। सिक्ख अपने छठे गुरु हरगोविन्दजी की जेल से रिहाई, पंजाबी स्वामी रामतीर्थ के जन्मदिन व उनकी समाधि इसी तरह आर्य समाज वाले महर्षि दयानन्दजी सरस्वती के देहवियोग में दीपावली मनाते हैं। साथ ही सभी के मनाने के तरीकों में भी अन्तर है। कोई लक्ष्मीजी को पूजता है, कोई राम को तो कोई महावीर को, कोई गणेश को तो कोई बही-खातों को, किसी की तराजू इष्ट है, किसी की तलवार, किसी को शस्त्र इष्ट है तो किसी को शास्त्र। इसी प्रकार कोई पटाखे फोड़ता तो कोई उन्हें पूजता है। कोई मिठाई बाँटता है तो कोई कपड़े। सब अपने-अपने राग के अनुसार अपनी आराधना करते हैं जिसमें कोई अज्ञ है तो कोई विज्ञ, कोई भोले हैं तो कोई भाले। विकृतियाँ सभी जगह संभव है, किसी को भगवान में भोग दिखते हैं तो किसी को वैराग्य।

प्रश्न यह है कि हम कैसे मनायें? दीपावली का वास्तविक और सच्चा अर्थ क्या है? दीपावली को प्रकाश पर्व भी कहा जाता है। प्रकाश ज्ञान का प्रतीक है, और दीपक भी प्रकाश और ज्ञान का ही प्रतीक है। दीपावली अर्थात् दीपों की आवली, दीपों की पंक्ति या दीपों की परम्परा। भगवान महावीर का निर्वाण और इन्द्रभूति गौतम गणधर का केवलज्ञान ज्ञान की परम्परा का आदर्श पर्व है। भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव के उपरान्त सच्चे अर्थों में पर्व है। इन्द्रभूति गौतम स्वामी ने उस ही रात्रि केवलज्ञान लेकर मनाया था। गुरु की परम्परा में बढ़ते हुये उनकी आज्ञा मानकर परम वीतरागी, लोकालोक के ज्ञाता भगवान हो गये थे।

महावीर स्वामी ने कर्म बंधन से निर्मुक्त अवस्था को जिस निर्वाणोत्सव के रूप में प्राप्त किया था, उसकी साधना त्रिकाल निरावरण निर्बन्ध स्वभाव की श्रद्धा-ज्ञान-लीनता पूर्वक ही सच्चे अर्थों में निर्वाणोत्सव है। अन्यथा सब कुछ सिर्फ आडम्बर और प्रदर्शन है।

निर्वाणोत्सव क्या है?

01. कर्मबन्ध से पूर्ण निर्मुक्त अवस्था की प्राप्ति निर्वाणोत्सव है।
02. निर्बन्ध स्वभाव की श्रद्धा-ज्ञान-लीनता निर्वाणोत्सव है।
03. वीर का अनुसरण कर, मुक्ति मार्ग का पथिक बनना निर्वाणोत्सव है।?
04. निर्वाण को प्राप्त भगवान महावीर जैसी निर्वाण दशा की प्राप्ति का उत्साह होना निर्वाणोत्सव है।

05. वीतरागी जिनशासन की प्रभावना के निमित्त उत्सव आयोजित करना निर्वाणोत्सव है।

संक्षिप्त में भगवान महावीर स्वामी जैसी दशा प्राप्ति का उत्साह होना निर्वाणोत्सव है। उसके निमित्त विधान-पूजन स्वाध्याय आदि धार्मिक अनुष्ठान आयोजित करना निर्वाणोत्सव है। हमारा जीवन में मोक्षमार्ग का पथिक होकर, मोक्ष की प्राप्ति पुरुषार्थ होवे, इसी भावना के साथ, निर्वाणोत्सव की अपूर्व शुभकामनाएँ।

विशाल अहिंसा सभा सम्पन्न

(खनियाँधाना) :- श्री नंदीश्वर विद्यापीठ/विद्यालय चेतनबाग खनियाँधाना में आगामी दीपावली महापर्व वीर-निर्वाणोत्सव को अहिंसात्मक रूप से मनाने के उद्देश्यों की पूर्ति एवं प्रेरणा हेतु बुधवार दिनाँक 19/10/22 को "विशाल अहिंसा सभा" का आयोजन किया गया। सभा अध्यक्ष के रूप में खनियाँधाना नगर के थानाप्रभारी महोदय श्री तिमेश जी छारी (टी.आई) साहब मंच पर विराजमान रहे। मुख्य अतिथि विद्यालय के प्राचार्य श्री प्रमोद कुमार जी एवं विशिष्ट अतिथियों में शास्त्री दीपक जैन 'ध्रुव', ब्रह्मचारिणी सहजता दीदी सिंगोड़ी, प्राध्यापिका ब्र. प्रियंका दीदी भोपाल, मुख्याध्यापिका श्रीमति अमिता जैन सहित विद्यालय में अध्यापनरत समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएँ मंच पर विराजमान रहे।

सभा का शुभारंभ कक्षा सांतवी के छात्र अमन जैन व आरव जैन द्वारा मंगलमय मंगलाचरण पूर्वक किया गया। साथ ही छात्र जतिन जैन व प्रथम जैन द्वारा अहिंसा से संबंधित विषयों पर भाषण प्रस्तुत किए गए। इसी मध्य आगामी पर्व पर पटाखा आदि विस्फोटक सामग्री न करने की प्रेरणार्थ "सर्वोदय अहिंसा अभियान" के अंतर्गत प्रकाशित "अहिंसा-पत्रिका" का भव्य विमोचन आदरणीय टी.आई. साहब सहित समस्त मंचासीन अतिथिगणों के करकमलों से सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् श्री नंदीश्वर विद्यापीठ के प्राचार्य साहित्याचार्य शास्त्री दीपक जैन 'ध्रुव' द्वारा सर्वोदय अहिंसा अभियान के परिचय के साथ-साथ, पटाखा आदि विस्फोटक सामग्री के प्रयोग से होने वाले लाभ-हानि आदि के बारे में, उद्बोधन के माध्यम से विशेष प्रकाश डाला गया।

इसी क्रम में ब्रह्मचारिणी सहजता दीदी एवं प्राध्यापिका ब्रह्मचारिणी प्रियंका दीदी भोपाल द्वारा छात्र-छात्राओं को विशेष प्रेरणाएँ प्रदान की गई।

साथ ही आदरणीय थाना प्रभारी महोदय द्वारा भी अपने उद्बोधन के माध्यम से आगामी पर्व को खुशियों के साथ, प्रदूषण मुक्त व जीव संरक्षण की दृष्टि से मनाने की विशेष अपील एवं प्रेरणा प्रदान की गई। तदोपरांत शास्त्री दीपक जैन 'ध्रुव' द्वारा सामूहिक "अहिंसा शपथ ग्रहण" पूर्वक अहिंसा संकल्प पत्र भरने की विशेष प्रेरणा छात्र-छात्राओं के मध्य की गई तथा अंत में विद्यालय के प्राचार्य महोदय श्री प्रमोद जी 'प्रेम' द्वारा अपने उद्बोधन के साथ आगंतुक अतिथि महोदय के प्रति धन्यवाद सहित सामूहिक आभार प्रकट किया गया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का सफलतम संचालन विद्यापीठ के अधीक्षक आकाश शास्त्री 'अनंत' द्वारा किया गया।

इस प्रकार उपर्युक्त आयोजन सानंद सम्पन्न हुआ।

लेख

वीर निर्वाण संवत् : भारत का उपलब्ध सर्वाधिक प्राचीन एवं जीवंत संवत

- पं. अनुभव शास्त्री खनियाँधाना

श्रमण संस्कृति भारत की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। विश्व और भारत में संस्कृतियाँ तो अनेकों रहीं, किन्तु समय की दौड़ में वे अब जीवित नहीं हैं। श्रमण संस्कृति प्राचीन होने के साथ-साथ वर्तमान में जीवित संस्कृति भी है। इस संस्कृति का जीवित होना इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि इसके सिद्धांत प्रासंगिक, सारगर्भित, जीवनोपयोगी होने के साथ-साथ समय के प्रत्येक अंतराल में मानव प्रजाति को उसके लक्ष्य तक पहुँचाने में समर्थ है, जिसके कारण यह आज भी जीवित एवं उपयोगी है।

इसकी प्राचीनता का एक अद्वितीय प्रमाण है वीर निर्वाण संवत्। ऐसा नहीं है कि वीर निर्वाण संवत से पूर्व भारत या विश्व में किसी तरह के संवत नहीं थे, किन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से देखने पर भारत में पिछले 2500-3000 वर्षों के इतिहास में इससे अधिक प्राचीन कोई दूसरा संवत दिखाई नहीं देता है।

अभिलेखों, शिलालेखों और साहित्य में प्राप्त संवतों के उल्लेख का विभाजन मुख्यता चार प्रकार से किया जा सकता है। 1. वीर निर्वाण संवत 2. विक्रम संवत 3. शक संवत 4. ईस्वी सन्। इसके अलावा हिजरी जो कि एक मुस्लिम संवत् है का उल्लेख भी प्राप्त होता है।

वीर निर्वाण संवत् के विश्लेषण से पूर्व शेष तीन संवतों के इतिहास पर संक्षिप्त तथ्यात्मक जानकारी इस प्रकार है। विक्रम अथवा बिक्रम संवत् राजा विक्रमादित्य से संबंधित है, जिसे भारत देश में विपुल मात्रा में स्वीकार किया गया। यह ईस्वी सन से 56 वर्ष 7 महीने पूर्व का है। कुछ इतिहासकारों के अनुसार विक्रमादित्य चन्द्रगुप्त द्वितीय की उपाधि थी अतः इस संवत् का सम्बन्ध चन्द्रगुप्त द्वितीय से होना चाहिए। सन 1901 से नेपाल में विक्रम संवत् को आधिकारिक संवत् के रूप में स्वीकृति प्राप्त है।

शक संवत् जो कि एक हिंदु पंचांग है जिसका प्रारंभ ईस्वी सन 78 से माना जाता है। इस संवत् का उपयोग भारत देश में शास्त्रकारों, इतिहासकारों ने शास्त्र, शिलालेख, अभिलेख आदि के माध्यम से किया गया।

वीर निर्वाण संवत् भारत का सबसे प्राचीन उपलब्ध पंचांग है जिसका संबंध भगवान महावीर के निर्वाण (दीपावली) से है। वीर निर्वाण संवत् का सबसे पहला साहित्यिक उल्लेख यतिवृषभ आचार्य द्वारा लिखित तिलोय पण्णत्ति ग्रंथ में प्राप्त होता है। आचार्य जिनसेन ने हरिवंश पुराण में वीर निर्वाण संवत् एवं शक संवत् के बीच कितनी समयावधि का अंतराल है इसके संदर्भ में गणना प्रदान की है। प्राप्त उल्लेख के अनुसार वीर निर्वाण संवत् शक सम्वत से 603 वर्ष 5 महीने 10 दिन पुराना है। इस तरह वीर निर्वाण संवत् विक्रम संवत् से लगभग 470 वर्ष प्राचीन है एवं शक संवत् से लगभग 604 वर्ष प्राचीन है।

बडली में वीर संवत् 84 का एक शिलालेख प्राप्त हुआ है जो वर्तमान में अजमेर के संग्रहालय में सुरक्षित है। पुरातत्ववेत्ता डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने ईस्वी सन् 1912 में इस शिलालेख की खोज की थी। सुप्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. राजबली पांडेय अपनी पुस्तक इंडियन पोलियोग्राफी में लिखते हैं कि 'अशोक के पूर्व शिला लेखों में तिथि अंकित करने की परंपरा नहीं थी बडली का शिलालेख तो एक अपवाद है।' बडली राजस्थान के अजमेर जिले में आता है। इस तरह भारतीय पंचांग/संवत् का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि भारत का सर्वाधिक प्राचीन उपलब्ध पंचांग वीर संवत् है।

लेख

अनुमोदना

- पं. स्वानुभव शास्त्री खनियाँधाना

अनुमोदना के लिए जिनागम में अनुमति शब्द भी मिलता है। अनुमति-त्याग प्रतिमा में भी अनुमोदना का त्याग किया जाता है।

रत्नकरण्ड श्रावकाचार में भी कहा गया है कि 'जिसकी आरम्भ, परिग्रह में या इस लोक संबंधी कार्यों में अनुमति (अनुमोदना) नहीं है, वह रागादि रहित समबुद्धि वाला है। वह ही अनुमति-त्याग प्रतिमा का धारी मानने योग्य है।'

मुनिराज भी उद्दिष्ट आहार का त्याग आरंभ परिग्रह के अनुमोदकपने का त्याग करने के लिए ही करते हैं। यहाँ मूलाचार का कथन भी द्रष्टव्य है कि 'उद्दिष्ट आहार करने वाले साधु के प्रतिसेवना अनुमति नाम का दोष आता है।'

'पर के द्वारा दिया गया कृत-कारित - अनुमोदना रहित प्रासुक और भोजन करने रूप जो सम्यक् आहार का ग्रहण करना, वह एषणा समिति है।'

इसप्रकार चरणानुयोग में श्रावक एवं मुनिराजों के लिए पाप कार्यों की अनुमोदना का निषेध किया गया है।

अनुमोदना के फल के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण तथ्यः-

1. हम जिन कार्यों की अनुमोदना कर रहे हैं, उनके फल स्वरूप वे कार्य हमारे साथ भी घटित होते है; अतः जिन कार्यों के फल को हम भोगना चाहते हैं या भोग सकते हैं, हमें उन्हीं कार्यों की अनुमोदना करना चाहिए।

2. 'गुणवान् की अनुमोदना करने पर अनुमोदना करने वालों को भी गुण का लाभ होता है तथा अवगुणी की प्रशंसा करने वालों को अवगुण का लाभ होता है; अतः गुणवान की ही प्रशंसा करना चाहिए।'

प्रथमानुयोग में अनेक ऐसे साक्ष्य हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि अवगुणियों की प्रशंसा(अनुमोदना) का फल बहुत बुरा होता है और पुण्यात्मा जीवों के कार्यों की अनुमोदना मात्र उच्चगति का कारण बन जाती है।

अनादिकाल से यह जीव संसार में परिभ्रमण करता हुआ मोहरूपी पिशाच से बैल की भाँति जुत रहा है, उसमें एकमात्र कारण इसके स्वयं के ही पाप कार्य है; जो यह कृत-कारित और अनुमोदना के माध्यम से करता है। कृत और कारित के स्वरूप से तो सभी भलीभांति परिचित हैं; परंतु अनुमोदना के स्वरूप से अनभिज्ञ हैं; अतः अनुमोदना के स्वरूप को आगम के आलोक में देखते हैं:-

अनुमोदना शब्द अनु उपसर्ग पूर्वक मुद् (प्रसन्नता) धातु से ल्युट् प्रत्यय करके बना है, जिसका अर्थ होता है दूसरे के द्वारा किये जाने पर प्रसन्न होना।

स्वयं न करते हुए भी अपने लिए किये जा रहे पाप कार्यों का निषेध न करना भी अनुमोदना है; क्योंकि करने वाले के मानस, परिणामों की आपके चित्त में स्वीकृति है; इसलिए आपने निषेध नहीं किया; अतः अनुमोदना का पूरा फल लगेगा।

राजवार्तिक में कहा है कि 'कोई व्यक्ति किये जाने वाले कार्य का यदि निषेध नहीं करता तो उन परिणामों का समर्थक होने से वह उसका अनुमोदक माना जाता है।'

स्वयं के लिए न किया गया हो; परन्तु यदि हमारे अधिकृत क्षेत्र में किया गया हो और उसका निषेध न किया जाए तो भी अनुमोदना का पाप लगता है। अधिकृत क्षेत्र से तात्पर्य है कि यदि द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव से विचार किये जाने पर निषेध करने में कोई बाधा न पहुँचे तो वह हमारा अधिकृत क्षेत्र है और अधिकृत क्षेत्र में हो रहे पाप कार्य का निषेध न करना अनुमोदना है।

अनधिकृत क्षेत्र में हो रहे पाप कार्य का भी निषेध तो करना ही चाहिए; परन्तु वहाँ निषेध बाह्य क्रिया रूप न होकर मात्र अन्तरंग परिणामरूप होना चाहिए अर्थात् करने वाले के मानस परिणामों की स्वीकृति नहीं होना चाहिए और हो रहे पाप कार्य का अन्तरंग में खेद होना चाहिए; अन्यथा अनधिकृत क्षेत्र में किये जाने वाले पाप कार्य का भी दोष लगता है।

प्रश्न - लोक में भी तो यही देखने में आता है कि अनुमोदना से ज्यादा फल कृत का मिलता है, जैसे - किसी ने गोली मारी और दूसरे ने मात्र अनुमोदना की तो जेल (सजा) गोली मारने वाले को ही होती है। अनुमोदना वाले को नहीं; अतः तीनों का फल समान है - यह कहना व्यर्थ ही है?

उत्तर - यह बहुत स्थूल कथन है कि गोली मारने से जेल गया। प्रथमानुयोग में उपदेश की शैली में कहा जाता है कि तुमने यह पाप किया उसका यह फल मिल गया।

वास्तव में करणानुयोग की अपेक्षा विचार किया जाए तो पाप कार्यों से बांधे गए कर्म का उदय उसके आबाधाकाल के पूरे होने पर ही आता है। '1 कोड़ाकोड़ी सागर की स्थिति वाले कर्म में 100 वर्ष का अबाधाकाल होता है। जैसे मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति 70 कोड़ाकोडी सागर है, तो 70 कोड़ाकोड़ी सागर वर्ष की स्थिति वाले कर्म का 7000 वर्ष बाद उदय प्रारंभ होता है' वैसे ही यहाँ गोली मारते समय जिस कर्म का बंध किया, उसका फल तो उसके आबाधाकाल के पूरे होने पर मिलेगा। अभी गोली मारने के फल में जेल नहीं गया; अपितु किसी और पूर्व कर्म के उदय से जेल गया है।

प्रश्न - कर्ता और अनुमोदक को फल आबाधाकाल पूरा होने पर मिलेगा - यह तो समझे; परन्तु जब फल मिलेगा तब तो अनुमोदक से ज्यादा कर्ता को ही मिलेगा?

समाधान - कर्ता को ही अधिक फल मिलेगा यह मानना भ्रमवश होता है तथा कृत, कारित और अनुमोदना का समान फल है - यह भी सामान्य कथन ही है; क्योंकि हिंसा में प्रमाद परिणति मूल है अर्थात् कर्ता और अनुमोदक में अधिक प्रमाद (कषाय परिणाम) जिसके है, उसे अधिक बुरा फल मिलेगा। उपर्युक्त उदाहरण में देखें तो गोली मारने वाले से अधिक कषाय परिणाम यदि अनुमोदक के हैं तो फल उसको अधिक मिलेगा। पुरुषार्थसिद्ध्युपाय में कहा भी है कि 'हिंसा अनुभावेन फलति' अर्थात् कषाय-भाव के अनुसार फल मिलता है। यथा - 'एकः करोति हिंसा भवन्ति फल भागिनो बहवः अर्थात् हिंसा तो एक पुरुष करता है और फल को भोगने वाले अनेक होते हैं। जैसे- चोर को फांसी की सजा में मारता तो एक चांडाल है; परन्तु सर्व दर्शक अनुमोदना पूर्वक रौद्र परिणाम करके पाप के भोक्ता होते हैं।'

इसप्रकार इन तथ्यों के माध्यम से अनुमोदना एवं अनुमोदन के फल का सम्यक् निर्णय करके ज्ञान की निर्मलता के द्वारा वीतरागता का ही उद्यम करना योग्य है।

3. यदि हम किसी गलत व्यक्ति की प्रशंसा, सेवा, स्तुति करते है तो उसके द्वारा किये गए पाप कार्यों की अनुमोदना का फल हमें लगता है। यही कारण है कि जिनागम में कुगुरु की प्रशंसा, सेवा, स्तुति करने का निषेध किया गया है; कहा भी गया है:-

'जो जानते हुए भी लज्जा, गारव और भय से कुगुरु के पैरों में पड़ते हैं, उनको बोधि अर्थात् सम्यक्त्व नहीं है। वे जीव पाप की अनुमोदना करते हैं। पापियों का सम्मान आदि करने से भी पाप की अनुमोदना का फल लगता है।'

4. कृत, कारित और अनुमोदना का समान फल है। - यह कथन सुनते ही हमारे मन में उथल-पुथल होने लगती है; क्योंकि हमें अनुमोदना में पर द्रव्य हमारे द्वारा परिणमित होता हुआ अर्थात् कोई कार्य होता हुआ नज़र नहीं आता; इसलिए हमें यह बात स्वीकृत नहीं होती कि तीनों का फल समान है; परन्तु हम यह नहीं विचारते हैं कि कृत और कारित में भी यह जीव द्रव्य पर का कर्ता तो है ही नहीं। वहाँ भी इसे फल तो इसके आत्म-परिणामों के अनुसार ही मिलता है और अनुमोदना में भी फल आत्म-परिणामों के अनुसार ही मिलता है; अतः आत्म-परिणामों की मुख्यता से यह कहा जाता है कि कृत, कारित और अनुमोदना का समान फल है।

तथा जब स्वयं न कर सके, तब दूसरों से कराता है; दूसरों से भी न करा सके, तब दूसरों के द्वारा किये जाने पर प्रसन्न होकर अनुमोदना करता है। जैसे स्वयं दान न कर सके तो दूसरों से दान कराता है, दूसरों से भी दान न करा सके तब दान दे रहे जीव की विशुद्ध परिणामों द्वारा प्रशंसा करता है।

यहाँ विचारणीय बात यह है कि कृत, कारित और अनुमोदना तीनों में परिणाम तो दान करने के ही रहे; अतः परिणामों की अपेक्षा तीनों का समान फल कहा है।

कोई कुतर्क करे कि आप कृत, कारित और अनुमोदना का समान फल मत कहिए; क्योंकि जीव स्वच्छंदी हो जायेंगे, वे कहेंगे कि हमें व्यवसाय के लिए जाना हैं; अतः हम मंदिर नहीं जा रहे; परन्तु जो मंदिर जा रहे है, उनके उस कार्य की हम अनुमोदना कर रहे है; अतः फल तो हमें मिल ही गया। अब मंदिर जाने से क्या प्रयोजन?

समाधान - अज्ञानी तो ऐसा कहेंगे ही क्योंकि उनका प्रयोजन तो जिनवाणी के कथनों से स्वच्छंदता का पोषण करना ही है; परन्तु उनके स्वच्छंदी हो जाने के भय से यथार्थ उपदेश न दिया जाए - यह उचित नहीं। जैसा कि टोडरमलजी ने भी कहा है कि यदि गधा मिश्री खाकर मर जाए तो ज्ञानी पुरुष तो मिश्री खाना नहीं छोड़ते।

अतः अनुमोदना का बड़ा फल जानकर मिथ्यात्व पोषक हिंसादि समस्त पाप कार्यो से बचते हुए अपने परिणामों की सम्हाल पर बल देते हुए स्वसन्मुखता की ओर बढ़ने का पुरुषार्थ करना चाहिए।

इसप्रकार इन तथ्यों के माध्यम से अनुमोदना एवं अनुमोदन के फल का सम्यक् निर्णय करके ज्ञान की निर्मलता के द्वारा वीतरागता का ही उद्यम करना योग्य है।

लेख

निर्वाणोत्सव मनाना कब सार्थक ?

- पं. नमन जैन शास्त्री, रुरावन

कार्तिक कृष्ण अमावस्या को हम सब बड़े ही हर्षोल्लास के साथ निर्वाणोत्सव मनायेंगे। पूजन करेंगे, निर्वाण लाडू अर्पित करेंगे और अपने मित्र मिलेंगे मंदिर में तो सेल्फी लेंगे... हैप्पी दीपावली बोलकर स्टेटस पर चिपका देंगे बस हो गया निर्वाणोत्सव। पर कभी विचार किया हमारा निर्वाणोत्सव मनाना सार्थक कब होगा। हमने मात्र पूजन कर लेने, लाडू अर्पित कर देने में ही अपने कर्तव्य की इतिश्री मान ली हैं।

क्या भगवान महवीर स्वामी की प्रतिमा जी को देखकर ऐसा नहीं लगता मानो वो हम से कुछ कह रहे हो, कुछ दिखलाना चाहते हो शान्त चित्त होकर विचार करें तो भगवान महावीर स्वामी की नासागदृष्टि हमसे कह रही है :-

अपना सुख तो अपने में है, बाह्य वस्तु में व्यर्थ प्रयास।
जग का सुख तो मृग तृष्णा है, झूठे हैं उसके पुरुषार्थ।।

हम जिस सुख की तलाश में इधर - उधर भटक रहे है। इतनी उठापटक कर रहें है। सुख सुविधाएं जुटाने में एड़ी से चोटी तक का जोर लगा रहें हैं।वह परम सुख और कहीं नहीं अपने अंतर में है।

"वीरा प्रभु के ये बोल तेरा प्रभु तुझ में ही डोले"

जहां भगवान महावीर स्वामी की दृष्टि (अपने स्वभाव पर) हैं, वहां हमारी दृष्टि भी स्थिर हो जाये तब मानना सार्थक होगा हमारा निर्वाणोत्सव। प्रति समय - प्रति पल हमें अपने स्वभाव का स्मरण रहें। लेकिन आज हमें जिसका करना था विस्मरण उसका करते हैं स्मरण और जिसका करना था स्मरण उसका कर दिया विस्मरण - विचारना ?

1. भगवान महावीर स्वामी अहिंसा परमो धर्मः का सबसे बड़ा सूत्र देने वाले हैं। आज उन्हीं के निर्वाणोत्सव पर बड़े ही हर्ष के साथ पटाखे फोड़कर, हिंसा का तांडव करते है क्या यह बड़े ही दुःख व आश्चर्य की बात नहीं है। जब-तक हम अपने जीवन में अहिंसा धर्म को नहीं अपनायेगे तब तक कैसे मनाना सार्थक होगा निर्वाण उत्सव ?
2. जिन-जिन कार्यों को करने से निश्चित ही हिंसा होती और हमें ज्ञात हैं। हम स्वार्थवश, लोलुपतावश छोड़ नहीं रहे हैं जैसे - रात्रि भोजन, छानकर पानी न पीना, जमीकंद, अभक्ष्य पदार्थों का सेवन, इन सबका त्याग करने की सामर्थ्य सभी में हैं और जितना बन सकें उतना तो बुद्धि पूर्वक करें ही। यदि हम नहीं कर पा रहे हैं तो कैसे मनाना सार्थक होगा निर्वाणोत्सव ?
3. भगवान महावीर स्वामी की 11 शिक्षाएं प्रसिद्ध है। हम उनका अनुपालन नहीं कर पा रहे है तो कैसे मनाना सार्थक होगा निर्वाणोत्सव ?
4. उन्ही शिक्षाओं में एक शिक्षा यह भी है- प्रत्येक जीव अपनी भूल से दुःखी हैं और अपनी भूल को सुधार कर सुखी हो सकता हैं। यदि हम दुःखी होने पर दूसरों को दोष देते हैं तो कैसे सार्थक होगा हमारा निर्वाणोत्सव मनाना ?
5. एक शिक्षा यह भी है- प्रत्येक जीव पुरुषार्थ करें तो भगवान बन सकता। भगवान महावीर स्वामी का निर्वाणोत्सव हमें पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है। जिसतरह वह शेर की पर्याय में सम्यकदर्शन लेकर पशु से परमेश्वर बनने

के मार्ग पर अग्रसर हुए थे और फिर दस भव बाद महावीर की पर्याय में परमात्मा बन गये थे। वैसे हम भी इस मनुष्य पर्याय में नर से नारायण बनने के मार्ग पर अग्रसर तो हो.... समय लग सकता हैं परन्तु मंजिल न मिले ऐसा हो ही नहीं सकता।

महावीर स्वामी का निर्वाणोत्सव हम धूमधाम से मनाते है और मनाना भी चाहिए क्योंकि यह पशु से परमात्मा और नर से नारायण बनने की विधि को बताने वाले तो महावीर स्वामी ही हैं। निर्वाणोत्सव हमें क्या संदेश दे रहा हैं यह भी स्मरण में रखना चाहिए - जगत में कहीं सुख नहीं हैं उन्होंने भी सब राज-पाट छोड़ कर, चैतन्य की साधना कर वह भी सिद्ध बन गये और हमें सिद्ध बनने का मार्ग दिखला गये।

जिस तरह कोई हमें खजाने का नक्शा देवें और हम पुरुषार्थ करें तो निश्चित ही खजाने तक पहुँच सकते हैं। वैसे ही महावीर की वाणी जिनवाणी रुपी नक्शे में हमारे पास उपलब्ध हैं। परम सुख को देने वाली, अपने चैतन्य के खजाने तक पहुँचाने वाली। उस खजाने तक पहुँचने के लिए सबसे पहले हमें उस नक्शे को समझना होगा तब वह मार्ग हमें जिनवाणी के अभ्यास से समझ में आयेगा। इसलिए शास्त्र स्वाध्याय अवश्य करें। भगवान महावीर स्वामी के निर्वाणोत्सव से ही अपने निर्वाण की तैयारी का शुभारंभ कर दें तभी हमारा निर्वाणोत्सव मनाना सार्थक होगा।

बोलिए भगवान महावीर स्वामी की जय...

महावीर दशक

कविता

- शास्त्री नमन जैन, रुरावन

महावीर भगवान को नमकर बारंबार।
तीन लोक के नाथ की, महिमा अगम अपार।।दोहा।।

जब चतुर्थ काल के तीन वर्ष, साढ़े आठ माह शेष रहे।
तब अंतिम उपदेश हुआ प्रभुवर का, भव्यजन प्रमोद हुए।।1।।

सर्व कर्म का नाश कर, अक्षत पद पर किया राज।
हुआ निर्वाण आपका, पूर्ण हो गये सकल काज।।2।।

इंद्रियों पर कर पूर्ण विजय, आप हुए जिनेन्द्र।
शत इन्द्रों से पूजित भये, आप हुए देवेन्द्र।।3।।

पाँच नाम विख्यात जगत में, पाँच पाप के नाशक हो।
पंचम गति को पा लिया, तीन लोक में सुखदायक हो।।4।।

अमावस्या की रात सुहानी, निर्वाण की खुशियाँ न्यारी।
महावीर जो मोक्ष पधारें, जग में आनंद की फुलवारी।।5।।

उसी शाम को गौतम प्रभु ने, केवलज्ञान का दीप जलाया।
दिव्य देशना रही निरंतर भव्यों जनों में आनंद छाया।।6।।

ज्ञान को निज में सीमित करलो, विज्ञान को प्रगटाओ।
महावीर का उपदेश यही है, सत्य अहिंसा अपनाओ।।7।।

पर का कर्ता कोई नहीं है, कण कण स्वतंत्र है भूतल का।
महावीर का ही मार्ग है कल्याण हेतु जगतीतल का।।8।।

अंतिम शासन वीर प्रभु का, सर्व जगत को मंगलकार।
तत्वज्ञान का मार्ग पकड़ लो, हो जाओगे भव से पार।।9।।

यही भावना वीर प्रभु जी, धर्म अहिंसा फैले जग में।
'नमन' करूँ मैं वीर प्रभु जी, चलूँ आपके ही पथ पे।।10।।

लेख

निर्वाणोत्सव पर हमारे कर्त्तव्य

- प्रतीति जैन 'मोदी'

"महावीर के संदेशों से बस इतना ही नाता है,
दीवालों पर लिख देते हैं, दीवाली पर पुत जाता है।।"

सदियों से यही तो करते आ रहे हैं हम भगवान महावीर के द्वारा बताये गये सत्य-अहिंसा आदि धर्म की बड़ी-बड़ी बातें हम बड़े-बड़े शब्दों में दीवालों पर लिख तो देते हैं पर कभी समय लगा कर उस लिखे को लखा (देखा) ही नहीं हैं तो उन सिद्धान्तों को समझने की और उन्हें अपने जीवन में उतारने की बात बहुत दूर की है।

समझने वाली बात है कि वीर निर्वाणोत्सव जिसे हम दीवाली, दीपावली आदि नामों से भी जानते हैं, इस पर्व का हमसे कितना नाता है। अभी तक तो आप सभी के घरों की सफाई-पुताई हो ही चुकी होगी। नये कपड़ों का लेना, पुराने कपड़ो का देना आदि लेन-देन भी हो चुका होगा। अब घरो में पकवान और मिठाईयाँ बनने का कार्य प्रारम्भ हो रहा होगा। किसी को सोना-चांदी अथवा नई गाड़ी इत्यादि खरीदना होगा तो वह भी दीवाली आने की ही प्रतीक्षा कर रहा होगा। अर्थात् इस बार भी दीवाली का दिवाला निकालने में हमने कोई कसर नहीं छोड़ी है।

भगवान महावीर ने तो सोचा भी ना होगा कि वे दुनियाँ को जिन क्रियाओं और वस्तुओं को व्यर्थ जानकर उन्हें त्यागकर निर्वाण प्राप्त कर रहे हैं, आगे जाकर यह दुनियां उन्हीं क्रियाओं और वस्तुओं में ही फंसकर उनके निर्वाणोत्सव को पर्व के रूप में मनाएगी।

सोचने वाली बात है कि जहाँ अन्य धर्म-जाति के लोगों ने हमारी देखा-देखी इस पर्व को अपने धर्म की किन्हीं घटना विशेष से जोड़कर इसे अपने तरीके से मनाना शुरु किया था, वहीं आज जैनमतावलंबी उनकी देखा-देखी इस पर्व को मनाने के लिये गणेश पूजन, लक्ष्मी-पूजन, बही-खाते की पूजन करने तक से नहीं चूकते। जो महावीर हम से कह गये थे कि तुम मेरे भक्त ही मत बने रहना बल्कि मेरी तरह वीतरागमय पथ पर चलकर तुम भी महावीर बन जाना। आज हम उन्हें छोड़ सरागी देवी-देवताओं को पूजने में लग गये हैं।

अहिंसा का पाठ जन-जन तक पहुँचाने वाले महावीर के निर्वाणोत्सव की खुशी को व्यक्त करने के लिये जब अज्ञानी जीव पटाखे आदि जलाकर हिंसा का ताण्डव करते हैं तो महावीर भगवान के अहिंसक सिद्धान्त को भी मानो उन पटाखों के धुए के साथ उड़ा देते हैं।

विचारिये, वीरनिर्वाणोत्सव को मनाने के क्या यह तरीके सही है। क्या वीरनिर्वाणोत्सव पर हमारे कोई कर्त्तव्य नहीं है। मात्र सुबह की एक पूजन और कुछ लोगों को वीरनिर्वाणोत्सव की वाट्सएप आदि पर शुभकामनायें प्रेषित करने से हमारे कर्त्तव्यों की इतिश्री हो जाती है।

इस संदर्भ में बाबू जुगलकिशोरजी युगल की पंक्तियाँ स्मरण में आ रही हैं-

अरे! जयन्ती निर्वाणों की, हम चर्चा करते आये हैं।
दीप-धूप से सत्पुरुषों की चर्चा भी करते आये हैं।
हमने कितने पर्व मनाये, देखी कितनी दीपावलियाँ
कितने ढूँढ़े पर भी जग में, हम-सा निकलेगा क्या छलिया
सदियों से हम करते आये, धर्म इंच पर हिल ना पाए।
अपने जहरीले मानस को, ज्ञान सुधा से सींच ना पाए।
बुझा ज्ञान का दीप और सब मुरझा गई हृदय की कलियाँ।
क्यों ना विडम्बना होगी यह, हम आज मनाते दीपावलियाँ?

वास्तव में अब समय है यह जानने और समझने का कि अन्तिम शासन नायक महावीर के शासन का कहलाने में हम गौरवान्वित होते हैं उनके निर्वाणोत्सव पर हमारे क्या कर्त्तव्य होने चाहिये।

अब समय है कि घरों की साफ-सफाई से अधिक हमारे परिणामों और अपने मन की साफ-सफाई करना हमारा कर्त्तव्य होना चाहिये। महावीर के संदेशों को दीवालों पर लिखने की बजाय उन्हें अपने अन्दर लखना हमारा कर्त्तव्य होना चाहिये।

निर्वाणोत्सव के नाम पर रिश्ते नातेदारों को मिठाईयाँ बांटने के स्थान पर महावीर के संदेशों को जन-जन तक पहुँचाना हमारा कर्त्तव्य होना चाहिये। नये कपड़े और अन्य अच्छे सामान खरीदने की बजाय नई और अच्छी सोच को विकसित करना हमारा कर्त्तव्य होना चाहिये।

हमारा कर्त्तव्य है कि समय के साथ जो कुरीतियाँ इस पर्व में समाविष्ट हो गई हैं, हम उन कुरीतियों को न केवल इस पर्व से दूर करें अपितु अन्य लोगों को भी इससे अवगत कराये। यह हमारा सर्वोच्च कर्त्तव्य है कि इस वीतरागी शासन पर किसी भी प्रकार से सरागी देवी-देवताओं व अन्य रीतियों की छाप ना पड़ने दे।

हमारा कर्त्तव्य है कि हम बाकी दुनियाँ को देख हिंसा-अहिंसा का विचार किये बिना इस पर्व को ना मनाये अपितु विश्व में अहिंसा के सिरमौर माने जाने वाले जैनधर्म की गरिमा को विचारते हुये अहिंसा के दीप जलाकर, बैर-भाव भुलाकर, आपस में समन्वय, सौहार्द और वात्सल्य भाव रखते हुये इस निर्वाणोत्सव को मनाये।

महावीर के वंशज होने के नाते हमारा कर्त्तव्य है कि भगवान महावीर के अहिंसा, अपरिग्रहवाद, अनेकान्त-स्याद्वाद, अकर्त्तृत्व आदि सिद्धान्तों और शिक्षाओं को पूरे विश्व ने सराहा और स्वीकारा है, उन सिद्धान्तों को हम समझे और अपने जीवन में अपनायें। कहते भी हैं-

महावीर के संदेशों को जीवन में अपनायेंगे।
महावीर के पथ पर चलकर महावीर बन जायेंगे।।

वास्तव में निर्वाणोत्सव पर एक मात्र ये ही हमारा कर्त्तव्य होना चाहिये। भगवान महावीर के पथ पर चलकर महावीर हो जाने में ही निर्वाणोत्सव की सार्थकता है और सफलता है।

लेख

दीपावली अर्थात ज्ञानदीपोत्सव

- सोमचन्द जैन, मैनवार, ललितपुर

जैन धर्म में इस युग के संस्थापक ऋषभदेव आदिनाथ हैं। शेष 23 तीर्थंकर प्रर्वतक हैं तथा 24 वें तथा अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हैं। इनका जन्म कुण्डलपुर के राजा सिद्धार्थ के यहाँ चैत्र शुक्ल तेरस को हुआ था। इनकी माता वैशाली गणतंत्र के अध्यक्ष राजा चेटक की पुत्री त्रिशला देवी थी। महावीर ने 30 वर्ष की आयु में सन्यास स्वीकार कर 12 वर्ष तक कठोर तपस्या कर केवलज्ञान पाया। 30 वर्ष तक अहिंसा, अनेकांत और सच्चे आत्म धर्म का उपदेश देकर 72 वर्ष की आयु में पावापुर विहार से मोक्ष पधारे। अतः प्रतिवर्ष दीपावली के दिन जैन धर्म में विशेष भक्तिभाव पूर्वक भगवान महावीर का निर्वाणोत्सव मनाया जाता है। कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन भगवान महावीर स्वामी को निर्वाण (मोक्ष) की प्राप्ति हुई थी। "अय दीपोत्सवदिने मोक्षं गतः महावीरः।" (आलापपद्धति) प्रातःकाल में महावीर स्वामी जी एवं संध्याकाल में गौतम गणधर को मोक्ष की प्राप्ति हुई इसीलिये जैन दर्शन में दीपावली पर्व मनाना सार्थक है। वैदिक परम्परा में रावण का वध करके राम अयोध्या वापस लौटे थे इसीलिये जनता ने अपने मनचाहे राजाराम के आने की खुशी में दीप जलाए।

एक पौराणिक कथा है कि इस दिन समुद्र मन्थन हुआ था जिससे लक्ष्मी जी प्रकट हुई। देवताओं ने उनकी पूजा की दीप जलाये। अतः सभी सम्प्रदायों में दीपावली का महत्व है। त्यौहार जीवन जीने का प्राण है। त्यौहार से जीवन की नीरसता दूर होती है तथा हमारी सभ्यता, संस्कृति, धर्म और महापुरुषों के प्रति आस्था बढ़ती है। अमावस्या की घनघोर रात्रि से लड़ने वाले नन्हें-नन्हें दीपक हमें शिक्षा देते हैं कि स्वयं को कमजोर न समझें। यदि सभी मिलकर ज्ञान प्रकाश करें तो अज्ञानरूपी अन्धकार दूर हो सकता है। वर्तमान में इंशान ज्ञान की चर्चा तो करता है पर अर्चा के नाम पर दूर भागता है। यह पर्व हमें शिक्षा देता है कि यदि सच्चा पुरुषार्थ करें तो, अमावस्या की काली रात भी हमारे लिए पूर्णिमा का प्रभात हो सकता है। जब दीपक तेल और बाती का आपस में प्रेम होता है तो एक ज्ञान दीप प्रज्जवलित होता है जो अन्धकार को चीरकर प्रकाश पैदा करता है। इसी तरह हम भी मन, वचन और काय को एक करें तो हमारे अन्दर धर्म ज्ञान का दीपक प्रज्जवलित होगा। हमारे जीवन में भी धर्मरूपी प्रकाश भरेगा साथ ही अहिंसात्मक दृष्टि से पटाखे न जलाने का नियम लें जिससे प्राणीमात्र की रक्षा हो सके।

एक दीपक तुम जलाओ
एक दीपक हम जलायें।
कुछ अंधेरा तुम भगाओ
कुछ अंधेरा हम भगायें।।

अतः सभी ज्ञानदीप प्रज्वलित कर निर्मल आत्मज्ञान प्रगट हो ऐसी भावना के साथ विराम...

लेख

अहिंसा परमोधर्मः

- संकलित

अध्यापक - भव्यो!! आइये आज हम जैनाशासन का हार्द 'अहिंसा' को समझते हैं। ज्ञानियों ने अहिंसा को परम-ब्रह्म कहा है - 'अहिंसा भूतानां जगति विदितं ब्रह्म-परमं।'

छात्र - गुरुजी, गाँधीजी ने भी तो अहिंसा को ही पूज्य माना है।

अध्यापक - जी हाँ। भव्यो, अहिंसा यह कायरता की निशानी नहीं है, बल्कि वीरों का आभूषण है। इसमें अगाध ताकत है।

छात्र - क्या है यह अहिंसा?

अध्यापक - 'प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा' - ऐसा तत्त्वार्थसूत्र के सातवें अध्याय का सूत्र है अर्थात् प्रमाद के योग से प्राण का घात ही हिंसा है।

छात्र - गुरुजी, प्राण का घातमात्र ही तो हिंसा है?

अध्यापक - प्राण का घात, द्रव्यहिंसा है, इसे तो सभी दर्शन मानते हैं, जैनदर्शन की यह विशेषता है कि वह गहरी तथा सूक्ष्म चर्चा करता है; इसीलिए तो गाँधीजी ने यह भी कहा है कि जहाँ अन्य दर्शनों की अहिंसा समाप्त होती है, वहाँ से जैनों की अहिंसा प्रारंभ होती है।

छात्र - प्रमाद क्या है?

अध्यापक - भावहिंसा, प्रमाद है और हिंसा में प्रमाद-परिणति मूल है; इसीलिए तो कहा है -

स्वयमेवात्मनात्मानं हिनस्त्यात्मा प्रमादवान्।
पूर्वं प्राण्यन्तराणां तु पश्चात् स्याद्वा न वा वधः।।

अर्थात् प्रमादी, प्रमाद के योग से पहले अपनी हिंसा तो कर ही लेता है; अन्य प्राणियों का घात पीछे हो या न भी हो।

छात्र - मात्र द्रव्यहिंसा को हिंसा कहने में क्या आपत्ति है?

अध्यापक - इसका सुन्दर उत्तर अकलंकस्वामी ने दिया है -

जले जन्तुस्थले जन्तुराकाशे जन्तुरेव च
जन्तुमालाकुले लोके कथं भिक्षुरहिंसकः।।

अर्थात् जल में, थल में, आकाश में, सभी जगह जीव भरे हुए हैं, जीवों में व्याप्त संसार में गमनागमन करता हुआ भिक्षु (कोई भी जीव), अहिंसक कैसे हो सकता है? भाई! श्वास लेने में भी तो हिंसा होती ही है न?

छात्र - खूब समझा गुरुजी, क्या और भी कोई आपत्ति आयेगी?

अध्यापक - सुनो! अरहन्तावस्था होते ही जब परमौदारिक शरीर होता है, तब उनके पूर्व में रहे औदारिकशरीर के

आश्रय से रहनेवाले अनन्त बादर निगोदी जीवों का घात होता है। ऐसी स्थिति में सबसे ज्यादा हिंसा, अरहन्तों में सिद्ध होगी, पर भावहिंसा अर्थात् रागादि की उत्पत्ति ही परमार्थ से हिंसा है। प्रवचनसार में भी कहा है -

मरदु व जियदु व जीवो अयदाचारस्स णिच्छिदा हिंसा।
पयदस्स णत्थि बंधो हिंसामेत्तेण समिदस्स।।

अर्थात् प्राणी मरे या न मरे, पर अयत्नाचार से हिंसा होती ही है। यत्नाचारपूर्वक प्रवृत्ति करने वाले के मात्र, बाह्यहिंसा से बन्ध नहीं होता।

छात्र - इससे तो विश्व में स्वच्छन्दता आ जाएगी, क्योंकि जब द्रव्यहिंसा को हम हिंसा न समझें....

अध्यापक - सुनो! भावों का सुधार होने के उपरान्त, क्रियाओं में सुधार होता ही है। क्रियाओं के सुधार का उपदेश भी भावों के सुधार के लिये ही तो है।

छात्र - अहा! कैसा अद्भुत सम्बन्ध है, भावों का और क्रियाओं का! अब समझ में आया कि अहिंसा, परमधर्म है, जगत का संरक्षण करने वाली माता है। 'अहिंसा जगन्माता।' विचारना . . .

लेख

वीर निर्वाण महोत्सव

- पं. रोहित शास्त्री (प्राचार्य) तीर्थधाम सिद्धायतन, द्रोणगिरि

वीर निर्वाण उत्सव जैनों का सबसे बड़ा पर्व माना जाता है क्योंकि इस दिन जैन धर्म की अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण हुआ था एवं सायंकालीन बेला में उनके शिष्य इंद्रभूति गौतम गणधर को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी इसलिए हम वीर निर्वाण महोत्सव पर्व मनाते हैं वीर निर्वाण महोत्सव का मतलब होता है जिस प्रकार से भगवान महावीर स्वामी ने आत्म स्वरूप को साध कर मोक्ष लक्ष्मी की प्राप्ति की उसी प्रकार हम सभी मोक्ष लक्ष्मी की ओर आगे बढ़े, अग्रसर हो, ऐसी भावना के साथ संपूर्ण जैन समाज में वीर निर्वाण महोत्सव पर्व मनाया जाता है। इस दिन सभी लोग प्रातः काल की बेला में जिनेन्द्र भगवान के समक्ष भगवान महावीर निर्वाण लाडू समर्पित करते हैं एवं उनके द्वारा बताये हुई अहिंसा, अनेकांत, स्याद्वाद आदि महान सिद्धांतों का पालन करते हैं तथा उनके द्वारा बताई शिक्षाओं का भी पालन करने का प्रण लेते हैं। वीर निर्वाण महोत्सव पर हम यह पुनः याद कर लेते है कि हमें मनुष्य पर्याय मिली है तो हमें भी आपके समान सिद्ध अवस्था को प्राप्त करना है न कि संसार में परिभ्रमण करना है जैनदर्शन में जितनी भी त्यौहार मनाए जाते हैं उन सभी का मूल उद्देश्य केवल आत्म कल्याण की भावना होती है। उसी के साथ सारे पर्व मनाये जाते है चाहे अष्टमी हो, चतुर्दशी हो, दशलक्षण हो, रक्षाबंधन हो या अभी निर्वाण महोत्सव। सारे पर्वो का उद्देश्य आत्म साधना मोक्ष प्राप्ति करना है। इसी भावना के साथ हम सभी लोग वीर निर्वाण महोत्सव पर्व मना रहे हैं हम पिछले कई वर्षों से वीर निर्वाण महोत्सव पर्व मना रहे परंतु आज तक हमने भगवान महावीर की शिक्षाओं को अंतरंग में धारण नहीं किया। अगर हम एक भी शिक्षा धारण कर लेते तो हम वीर निर्वाण महोत्सव पर्व नहीं मना रहे होते अपितु स्वयं निर्वाण पद को प्राप्त कर लेते।

लेख

पटाखे फोड़ कर त्यौहार को अशुभ न करें..

- संजय शास्त्री, संयोजक सर्वोदय अहिंसा

दीपावली खुशियों का त्यौहार है। हमें इसे इस तरह मनाना चाहिए, जिससे कि सभी को खुशियाँ प्राप्त हों। हमें इस दिन ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे कि कोई भी दूसरा प्राणी दुःखी हो। लेकिन लोग न जाने इस खूबसूरत पर्व को पटाखे चला कर बदसूरत बनाने में लग जाते हैं। इससे जो पर्यावरण प्रदूषण होता है, उससे सभी जन भलीभांति परिचित हैं ही।

कोरोना वायरस के समय सभी ने देखा ही था कि दिल्ली जैसे कई शहरों की आबोहवा साफ हो गई थी। उसी दिल्ली की हवा दीपावली के साथ ही बिगड़ने लगती है। पटाखों से न केवल पर्यावरण को नुकसान पहुँचता है, बल्कि इससे निकले धुंए से आपकी सेहत को भी गंभीर नुकसान होता है।

आइये जानते हैं कि पटाखे कैसे नुकसानदेह हैं -

- सस्पैंडेड पार्टिकुलेट मैटर यानी निलंबित कण पदार्थ, गले, नाक और आंखों से जुड़ी दिक्कतों को जन्म देते हैं। इसी की वजह से सिरदर्द भी होता है।
- पटाखों के फटने पर रंग निकलते हैं, जिन्हें बनाने के लिए रेडियोएक्टिव और जहरीले तत्त्वों का इस्तेमाल होता है। ये तत्त्व लोगों में कैंसर के जोखिम को बढ़ावा देते हैं।
- आतिशबाजी की आवाज काफी तेज होती है, जो 140 डेसीबल से ऊपर चली जाती है। आपको बता दें कि मनुष्यों के लिए मानक डिसीबल स्तर 60 डेसीबल है।
- क्या आप जानते हैं कि 85 डेसीबल से ज्यादा तेज आवाज सुनने से आपकी सुनने की शक्ति पर असर पड़ता है।
- डेसीबल का स्तर बढ़ने से बेचैनी, कुछ देर के लिए या हमेशा के लिए कान खराब हो सकते हैं।
- पटाखों के धुंए एवं शोर से गर्भवती महिलाओं, शिशुओं, वृद्धजनों एवं मरीजों के लिए नुकसान होता है।
- दैनिक भास्कर 1 नवंबर 2015 में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार लैब में भी साबित हो चुका है कि पटाखों में सीसा और पारा जैसे खतरनाक तत्त्व बड़ी मात्रा में मिले हुए हैं, जो 10-10 साल तक शरीर को नुकसान पहुँचाते हैं।
- ध्यान दें, पारा हमारे पाचन तंत्र को नुकसान पहुँचाता है। सीसा बच्चों के नर्वस सिस्टम और किडनी को नुकसान पहुँचाता है।
- चेस्ट स्पेशलिस्ट डॉ. अशोक महाशूर कहते हैं कि 6 साल से कम के बच्चे और फेफड़ों के मरीजों के लिए पारा और सीसा दोनों घातक है। पारा मेडीकल उपकरणों में भी इस्तेमाल नहीं होता।
- पटाखों के कारण आग लगने एवं शारीरिक क्षति होने के प्रमाण आप दीपावली के पहले और बाद में प्रकाशित समाचार पत्रों एवं न्यूज चैनलों पर देख सकते हैं।
- जल, वायु, ध्वनि प्रदूषण के साथ ही जगह-जगह गंदगी भी आपने स्वयं ने देखी ही होगी।

अब आप समझ ही गए होंगे कि खुशियों के इस पर्व को दुःख में तब्दील न करें।

दीपावली पर्व की शुभकामनाओं के साथ...

चतुर्थ अंक (वर्ष द्वितीय)
माह - अक्टूबर 2022

नव प्रसून

35

धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा व संस्कारों की पोषक पत्रिका . . .

ई - मासिक पत्रिका

काव्य संग्रह

अच्छे काम

- बाल ब्र. पं. श्री रवीन्द्रजी 'आत्मन'

हम सब भी कुछ काम करेंगे।
अच्छे-अच्छे काम करेंगे।।
नहीं अधिक आराम करेंगे।
खेल-खेलते काम करेंगे।।
नहीं व्यर्थ ही हम बोलेंगे।
नहीं व्यर्थ ही हम डोलेंगे।।
ऊधम नहीं मचायेंगे।
कूड़ा नहीं फैलायेंगे।।
किसी को नहीं चिढ़ायेंगे।
किसी को नहीं रुलायेंगे।।
सबका काम बनायेंगे।
सबको गले लगायेंगे।।
पढ़ेंगे और पढ़ायेंगे।
लालच में नहीं आयेंगे।।
धोखे में नहीं आयेंगे।
भय को दूर भगायेंगे।।
आत्मविश्वास जगायेंगे।
उन्नत देश बनायेंगे।।

चलिए उत्सव में

- बा.ब्र. पं. सुमतप्रकाशजी, खनियाँधाना

चलिए उत्सव में...
महावीर गए निर्वाण,
चलिए उत्सव में।
प्रभु वीर गए निर्वाण,
चलिए उत्सव में।।
कार्तिक श्याम अमावस प्यारी,
वीर मुक्ति की तिथि सुखकारी।
गौतम पायो ज्ञान...1
इंद्र महोत्सव करने आये,
दीप रतन के ठाठ जलाये।
चल गया पर्व महान...2
मायामयी तन प्रभु का रच के,
मोक्षकल्याणक पूजन करके।
कीना अंत विधान...3
आओ हम भी भक्ति बढाएँ,
मिल लाडू निर्वाण चढ़ाएँ।
पाना शिवपुर थान...4

महावीर निर्वाणोत्सव

- साहित्याचार्य शास्त्री दीपक जैन 'ध्रुव'

महावीर निर्वाण दिवस है,
कार्तिक-कृष्ण-अमावस को।
वह पवित्र दिन है यह प्यारा,
मन-महावीर बसाने को।।१।।
आत्मलाभ पाकर प्रभुजी ने,
जय-निर्वाण धरा पाई।
अनुपम आनंद पूर्ण-प्राप्ति से,
धरा पे मंगल घड़ी आई।।२।।
गौतम गणधर ज्ञान ज्योति को,
प्राप्त हुए तत्क्षण में ही।
अद्भुत आनंद जगत जनों को,
नित ज्ञानज्योति जलने में ही।।३।।
मेरी शुभकामनाएँ हैं सबको,
वीर निर्वाण पर्व की ही।
दीवाली भी कहते जग-जन,
उसकी खुशियाँ सबको ही।।४।।
मेरा यही भाव है सबसे,
जाने सब निज आतम को।
महावीर के पथ-पर-चलकर,
पावे पद-परमातम को।।५।।

समकित चादर

- श्री सुरेशचंद जैन 'साव', खनियाँधाना

समकित चादर ओढ़ के भव्यों, द्वार प्रभु के आओ।
प्रभु दर्शन कर निज वैभव लख, जीवन सफल बनाओ।।
नख से शिख तक जो भी ज्ञान है, वो वैभव है हमारा
चैतन्य भाव से भिन्न एक भी, परमाणु न हमारा
अतः सकल जगद्वन्द फन्द तज, स्वरूप गुप्त हो जाओ।।
समकित चादर.....
देह और इसके संयोगी, छूट जायें पलभर में
दुःख उठाये क्यों बहु तेरे, तू इनके चक्कर में
अनादिकाल से भटके भव में, अब तो शिवमग आओ।।
समकित चादर.....
लोक हमारा ज्ञान लोक है, जिसमें ज्ञेय झलकते
पर द्रव्यों अरु पर भावों में, ज्ञानी नहीं अटकते
तत्वारथ की सच्ची समझकर-संयम भाव जगाओ।।
समकित चादर.....
पढ़ो सुनो आगम की वाणी, मिथ्यातम को नशाओ
आपा पर का भेद अनुभवों, त्रिविध कर्म मल नाशो
प्रभु में निज प्रतिबिम्ब निरख कर, आत्म लीन हो जाओ।।
समकित चादर ओढ़ के भव्यों, द्वार प्रभु के आओ।
प्रभु दर्शन कर निज वैभव लख, जीवन सफल बनाओ।।

गीत महावीर

काव्य संग्रह

- अलका जैन आनंदी ओशिवारा मुंबई

कुंडलपुर में जन्म लिया था,
धीर सभी इनको कहते थे।
त्रिशला नंदन वीर कहाए,
संयम तप धर सब सहते थे।।
चैत्र त्रयोदस शुभ दिवस को,
जन्मे वीरा मंगलकारी।
अहिंसा परमो धर्म पर चले,
लोग सभी जाते बलिहारी।।..
घर-घर ढोलक ताशे बजते,
नाचे गाए दुनियां सारी।
जिये जग सुख चैन से चाहे,
रहे आनंदित प्रजा प्यारी।।..
राजपाट को त्याग चले ये,
वन गमन सभी छोड़े जाते।
देख मात पिता भावुक हुए,
अंतस को पुलकित ही पाते।।..
उत्थान जयति जय नम भज के,
सत्य अहिंसा धर्म पर चले।
जपते मंत्र नवकार महान,
देख इनको श्रृद्धा भाव फले।।

बाल कविता

वीर प्रभु की हम संतान
हम भी बनेंगे अब भगवान।।टेक।।
राग-द्वेष व वैर तजेंगे
वीतराग सर्वज्ञ भजेंगे
छोड़ कषायें पायें ज्ञान
हम भी बनेंगे अब भगवान।।1।।
हिंसा आदि पाप तजेंगे
पंच प्रभु का ध्यान धरेंगे।
न हो कभी कहीं अभिमान
हम भी बनेंगे अब भगवान।।2।।
सत्य-अहिंसा-अणुव्रत धारूँ
संयम का ही पथ अपनाऊँ
हूँ ज्ञाता दृष्टा आतमराम
हम भी बनेंगे अब भगवान।।3।।

कविता

भगवान महावीर स्वामी

- पं. ज्ञाता सिंघई, सिवनी

(जो जीव तीर्थंकर से दादा, तद्भव मोक्षगामी पिता, चाचा, भाई के होने पर भी उपादान की स्वयं की योग्यता से बात को न समझ पाया और अनेक भव दुःख सहता रहा। सिंह की पर्याय में जब उपादान तैयार हुआ तब नभ से उतरकर दो मुनिवर ने उसे तत्व का उपदेश दिया जिसे सिंह ने अत्यंत प्रीति और विनय से सुना। मात्र सुना ही नहीं धारण किया और पर्यायगत योग्यता अनुसार बाह्य आचरण भी सुधारा। यही जीव आगे चलकर वह शासन नायक महावीर हुए। इसी विषय पर मेरे निमित्त से स्वान्ता सुखाये लिखी गयी कविता...

कविता का अभिप्राय यह है कि जब शेर जैसे त्रिर्यंच गति का जीव अपना कल्याण कर सकता है। जिसे हाथी, घोड़ा, मच्छ आदि कर लें वह धर्म, मार्ग कठिन कैसे हो सकता है ! यह मार्ग तो अत्यंत सहज और स्वाधीन है। हम भी ऐसे पवित्र शासन की शरण में रहकर अपने पवित्र तत्त्व का निर्णय प्रतीति करे...

रे करके निज आतम श्रद्धान,
देख नर, शेर बना भगवान।।
सुना जब तू होगा भगवान,
हुआ तब निज धी का अभिमान।
करके जिन वच का अपमान,
रुला भव-भव में वह नादान।।
भटकते भव-भव में वनराज,
हुआ अब पकड़े मृग को आज।
देखे आकार बादलों बीच,
जोड़कर, छोड़ी परणति नीच।।

उतरते नभ से दो ऋषिराज,
करेंगें तत्त्व उद्बोधन आज।
जगा वनराज का अब उपादान,
होय अब आतम का बहुमान।।
हुई जब निज तत्त्व से प्रीत,
विचरते मृग सम पशुओं बीच।
पियें बहते झरने का नीर,
क्रूर सिंह हुआ धीर गंभीर।।
गरजते वन जाता था कांप,
उड़ाते अब माँखी नहीं आप।

काक भी करें चोंच से व्याधि,
सिंह लख निज को धरें समाधि।।
सिंह आगे होगा अब वीर,
हरेंगें जन्म-मरण की पीर।
होय निर्ग्रन्थ त्याग जन जाल,
प्रवर्ते वीर का शासन काल।।
कौन क्या किसे अरे समझाए,
बात तो स्वयं समझ में आये।
करें अब सब तत्वन् का ज्ञान,
लख ज्ञाता हों सब भगवान।।

प्रभु श्री वीर प्रेरणा

- मुकेश गोलेचा, बड़नगर

सुनो, जीव क्या कहते है महावीर, समझो, जीव की क्यों कहलाते वो महावीर,
निज आत्म को जाने बिन कहा बोल रहे हम जय महावीर,
निर्वाण जिसके बल पर हुआ ऐसे वो आत्म वीर, उस ताकत को पहचाना तो हर आत्मा ही है महावीर,
सर्व कर्मो को जीता तो निर्वाण हुआ जिनके आधीन,
वीर निर्वाण दिवस तब ही सार्थक जब समझे तत्वज्ञान की सही तस्वीर,
भाव हमारे भी ऐसे हो,खुले तब ही भगवान बनने की हमारी तकदीर,
निर्वाण का ऐसा हो उत्साह, यही उसकी तदवीर(युक्ति), आओ ना अब देर सब मिल आत्मगुण लिखै इबारत,
अरिहंत व सिद्ध बन संसार रण के बने अजेय रणवीर।।

कविता

कैसी दीपावली मनाई ?

- ब्र. सहजता दीदी, सिंगोड़ी

कैसी दीवाली मनाई-
खाई बाजार की मिठाई
शरीर में बीमारी आई।।
कैसी दीवाली मनाई-
निकाला दिवाला जुआ में भाई
घर-घर हो रही लड़ाई।।
कैसी दीवाली मनाई-
पटाखे फोड़े मनमाही
चिथड़े जीवों के उड़ाई।।
कैसी दीवाली मनाई-
लाइटिंग से घर सजाई
छिपकली ने गपशप कीड़े खाई।।
कैसी दीवाली मनाई-
देव मूढ़ता में मन रमाई
नए मिथ्यात्व का भार बढ़ाई।।
कैसी दीवाली मनाई-
पाप करके लक्ष्मी चाही
कैसी दिवाली मनाई।।
प्रभु ने ऐसी दिवाली मनाई-।
अनंत चतुष्टय की सिरीन लगाई
बाधा सहित सुख चमचमाई
प्रभु ने ऐसी दिवाली मनाई।।
ध्यान की ऐसी चकरी चलाई
परिणति ध्रुवता से चमचमाई
प्रभु ने ऐसी दिवाली मनाई।।
अनंत अनार ज्ञान दाने दहकाई
असंख्य प्रदेश धरा दम-दमाई
प्रभु ने ऐसी दिवाली मनाई।।
योगों की फुलझड़ी जलाई
अघाति कर्म की लड़ी चिटचिटाई
प्रभु ने ऐसी दिवाली मनाई।।

जिओ और जीने दो

- कवि स्वप्निल जैन, छिन्दवाड़ा

गीत अहिंसा गाता हूं मैं, जीव दया दिखलाता हूं।
महावीर के संदेशों को, जन-जन तक पहुँचाता हूं।
जीव दया और करुणा को, जिसने अपने मन में पाला है।
समझो महावीर की वाणी को, उसने अपने उर में धारा है।
जियो और जीने दो, का तुमने सुंदर संदेश दिया,
मोक्ष मार्ग पर चलने का ही, तुमने हर पल उपदेश दिया।
जीव दया को जियो और जीने दो से भी बतलाया है,
मानव हो या जंतु जीव सूक्ष्म, जीने का अधिकार बताया है।
जय बोलो महावीर की, जय बोलो महावीर की...
उस महावीर ने गाय-व्याघ्र को, पानी पिलाया एक ही प्याले में,
क्या करता मानव, क्यूँ करता हिंसा तू दिवाली में।
त्याग पटाखे बम-फुलझड़ियां, खुशियां खूब मना लेना।
इस दिवाली गा वर्धमान गुण, महावीर निर्वाण मना लेना।
महावीर निर्वाण मना लेना।

चरण नही आचरण छुओ

- डॉ अंशुल आराध्यम्, भोपाल

ओ महावीर के अनुयायी, तुम चरण नहीं, आचरण छुओ
या तो आतम पर शोध करो या महावीर का बोध करो
करुणा के दीपक धरे नहीं, जीवन भर मन के द्वारे पर
जो करना था वो किया नहीं बस उछल पड़े जयकारे पर
क्या कभी चेतना को धोया हमने चरित्र के पानी से
सच बोलो, कितना सीखे हैं हम महावीर की वाणी से
नापो आतम की गहराई अंतस का तारण तरण छुओ
जीवन विवेक से जियो, बुराई जो भी है अवरोध करो
या तो आतम पर शोध करो या महावीर का बोध करो
क्या ऐसे कर्म किये हमने जो महावीर से मिलते हों
अथवा दुःख देख किसी का भी दो फूल दया के खिलते हों
या कभी किसी गीले नयनों को हमने ज़रा टटोला हो
या वसुंधरा का हर प्राणी अपना है, ऐसा बोला हो
केवल भाषाओं के ज्ञानी मन का थोड़ा व्याकरण छुओ
हर जीव सुखद अनुभूति करे, ईश्वर से ये अनुरोध करो
या तो आतम पर शोध करो या महावीर का बोध करो

कविता

जब अंतर का दीप जलेगा...

- पं. शिखर शास्त्री 'चैतन्य', पिडावा

बाहर के अनगित दीपों से क्या होगा,
अंधकार तो तभी मिटेगा जब अंतर का दीप जलेगा।।
दीवाली आने से तो जग में दीपक जलते हैं,
पर हर मन मंदिर के दीपक बुझे हुए से मिलते हैं।।
घर चौबारे साफ हुए पर हम जैसे के तैसे,
जड़ दीपक से घर आंगन ज्योतिर्मय माना था जैसे।
अब मिथ्यातम का देख उजाला ये न समझना,
सुबह तभी होगी जब काला अंध हटेगा।
अंधकार तो तभी मिटेगा जब अंतर का दीप जलेगा,
निज ज्ञान के दीप द्वारा सच्ची दीवाली मनेगी।।
सम्यक् सुखमय जीवन की अंतर में ज्योति जलेगी,
शुचिता भी तभी पलेगी जब आतम रुचि प्रकटेगी।।
वैभव की खबर मिलेगी दर-दर का सफर मिटेगा,
फिर अनेकांत के इन्द्रधनुष से काला अंध हटेगा।।
अंधकार तो तभी मिटेगा,
जब अंतर का दीप जलेगा।
हे वीर प्रभु फिर से आओ इस भारत भूमि पे,
अंतर का दीप जलाने आओ अब भारत भूमि पे।।

भगवान महावीर

- राष्ट्रीय कवि श्री नरेंद्रपाल जैन उदयपुर

जिनके आदर्शों से ऊँचा अम्बर का कोई छोर नहीं,
जिनके तप की आभा से बढ़कर सूरज का भी जोर नहीं।
जिनके अन्तस् का क्षमाभाव सागर से बहुत ही गहरा है,
संचार प्रेम और करुणा से ये जग उस पर ही ठहरा है।
मुस्काने बांटें तो मुखड़े आंसू से युक्त नहीं होंगे,
धरती से लेकर अम्बर भी फिर प्रेम से मुक्त नहीं होंगे,
जग के आगे बढ़ने के कोई पथ अवरुद्ध नहीं होंगे,
यदि महावीर की माने तो दुनियां में युद्ध नहीं होंगे।
अरे महावीर को पढ़ा बहुत पर कौन यहां पर समझा है,
बस अहंकार में होकर प्राणी एक-दूजे में उलझा है।
इस सृष्टि के निर्माण नियम में जब निर्वाण का संयम हो,
हँसती आंखों के संग यहाँ निर्मोही हृदय का संगम हो।
तो सुनो विश्व को बारूद पर बैठाकर शांति खोजोगे,
जितना भी पाया है इक दिन हाथों से सारा खो दोगे।
प्राणी के आगे प्राणी भी अरे कभी विरुद्ध नहीं होंगे,
यदि महावीर की माने तो दुनियां में युद्ध नहीं होंगे।

खुशियाँ बाँटे-प्रदूषण नहीं

- कार्तिक शास्त्री 'बाँदा'

दीपावली खुशियों का एवं रौशनी का त्यौहार है। दीवाली में हम चंद समय की खुशी के लिए अपनी मेहनत से कमाये रूपयो पर आग लगा देते है।

कई परिवार ऐसे है, जिनके लिए दो वक्त की रोटी जुटाना मुश्किल है ऐसे में वे त्यौहार कैसे मनाए ?

अगर हम इस त्यौहार पर किसी जरूरतमंद परिवार को भोजन, फल, मिठाइयां, कपड़े देकर मदद करें, उनके चहरों पर मुस्कान लाने का, किसी के घर रौशनी लाने का प्रयास करें तो यह दीवाली हमारे लिए सार्थक सुखमय होगी।

चतुर्थ अंक (वर्ष द्वितीय)
माह - अक्टूबर 2022
नव प्रसून
40
धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा व संस्कारों की पोषक पत्रिका . . .
ई - मासिक पत्रिका

लेख

भगवान महावीर और भगवान राम हमारे आदर्श कैसे ?

- सिद्धार्थी अंकित शास्त्री, भगवां

शास्त्रों के कथन करने की पद्धति को अनुयोग कहा जाता है। वह अनुयोग चार होते हैं - प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग व द्रव्यानुयोग। जिसमें महापुरुषों के चरित्र का वर्णन हो, उसे प्रथमानुयोग कहा जाता है। प्रथमानुयोग के माध्यम से ही जीवन में सच्चे आदर्शों की स्थापना होती है। दुनियां में सभी को आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा दी जाती है किंतु सच्चे आदर्श कौन है - इस बात का विचार नहीं रहता। सच्चा आदर्श तो वही हो सकता है जो हमारे लिए एक दर्पण का काम करे। जिस प्रकार दर्पण में व्यक्ति अपना प्रतिबिंब बिना किसी लाग - लपेट के देख सकता है, दर्पण में चेहरे की यथार्थता ही भाषित होती है, उसी प्रकार हमारे जीवन में आदर्शों के माध्यम से हमें उनमें अपनी परछाई दिखाई देती है अथवा हमारे आदर्श हमें कभी अपने वास्तविक जीवन और लक्ष्य से कभी विमुख नहीं होने देते। इस युग में दो महापुरुष ऐसे हुए जिन्हें संपूर्ण समाज अपने आदर्श के रूप में स्थापित करता है, मात्र आदर्श के रूप में स्थापना ही नहीं करता अपितु प्रत्येक कार्य में उनका गुणगान भी करता रहता है। वे आदर्श हैं - वर्तमान शासननायक भगवान महावीर व भगवान राम।

दुनियां में प्रत्येक व्यक्ति सुखी होना चाहता है और यदि दुःखों का सामना करना पड़ जाए तो जन्मने वाले घर अथवा अपने माता - पिता को ही दोष देने लग जाते हैं लेकिन यह उचित नहीं है। भगवान महावीर अथवा भगवान राम जन्म से ही महान नहीं हो गए थे। किंतु उन्होंने अपने आप को महान बनाने का प्रयत्न किया। रामचंद्र भी जब गृहस्थ अवस्था में थे तब उनको भी लौकिक सुविधाएं सहज ही नहीं मिल गईं। उन्हें भी १४ वर्ष का वनवास भोगना पड़ा। वनवास में भी अनेक प्रकार की विपत्तियों का सामना करना पड़ा। अपनी प्राणों से भी प्रिय लगने वाली स्त्री का अपहरण देखना पड़ा। लेकिन इतनी प्रतिकूलताओं के बीच में भी उन्होंने संघर्ष करना नहीं छोड़ा और संघर्ष करने के साथ ही अपने कर्मोदय का विचार भी करते रहे। विपत्तियों से लड़ने का प्रयास भी करो, कर्मोदय का विश्वास भी करो तो तुम्हें कोई भी दुःखी नहीं कर सकता। अंततः रामचंद्र को सीता भी मिलीं और राज्य भी प्राप्त हो गया। अतः भगवान राम हमारे जीवन में लौकिक दृष्टि से आदर्श हैं क्योंकि उनका जीवन चरित्र भी हमें प्रतिकूलताओं में भी माध्यस्थ रहने की प्रेरणा देता है।

वर्तमान युग भोग - विलासिता का युग बनता जा रहा है। वर्तमान युग में भोगी ही अधिक दिखाई देते हैं, योगी नहीं। संपत्ति घुटने बराबर भी नहीं होती कि उसका अभिमान मस्तक बराबर हो जाता है। जिसके पास संपत्ति है उसके ही गीत गाए जाने लगते हैं। संपत्ति होने के समय अपने आप को सुखी मानने वाला जीव संपत्ति के अभाव में अपने आपको दुःखी महसूस करता है। भगवान महावीर और भगवान रामचंद्र के जीवन को यदि टटोला जाए तो गृहस्थ अवस्था में उन्हें संपत्ति की कोई कमी नहीं थी। महावीर स्वयं तीर्थंकर प्रकृति के धारक थे। जिनके जन्म के छह माह पहले से ही रत्नों की वर्षा आरंभ हो गई थी। जन्म होने के बाद पांडुक शिला पर जिनका अभिषेक हुआ। जिनके वस्त्र आदि की व्यवस्था भी देवगण किया करते थे। राजपाट में भी कोई कमी नहीं थी। जब दीक्षा धारण करने के बाद

केवलज्ञान की प्राप्ति हुई तो सौधर्म इंद्र की आज्ञा से कुबेर ने उत्कृष्ट वैभव से युक्त समवशरण की रचना की और भगवान स्वयं उस समवशरण में स्वर्ण निर्मित कमल के चार अंगुल ऊपर विराज रहे थे। जो इस बात का ही प्रतीक था कि जगत में उत्कृष्ट माने जाने वाले वैभव का भी आत्मवैभव के सामने कोई मूल्य नहीं। आत्मवैभव ही जगतपूज्य वैभव है। इसी प्रकार रामचंद्र जी भी बलभद्र थे, उन्हें भी कोई वैभव की कमी नहीं थी किंतु उसके बाद भी राज पाट को हेय जान दीक्षा को अंगीकार कर मोक्षलक्ष्मी का वरण किया। कहने का अभिप्राय यह है कि राग का प्रतीक कही जाने वाली लौकिक संपत्ति को भी भगवान महावीर व रामचंद्र जी ने हेय जानकर त्याग दिया व उपादेयभूत वीतरागता को अंगीकार किया। "जो संपत्ति के अलावा किसी के सामने नहीं झुकते, ऐसे जगत में उत्कृष्ट माने जाने वाले रागी भी वीतरागी के सामने नतमस्तक होते हैं।" अतः भगवान महावीर व रामचंद्र जी इसलिए भी आदर्श हैं कि उन्होंने वीतरागता प्राप्ति को ही आदर्श बताया।

वर्तमान युग में साधर्मी वात्सल्य और सहयोग की भावनाएं समाप्त होती जा रही है। लोग स्वार्थी होते जा रहे हैं, जब-तक बदले में कुछ न मिले तब-तक सहयोग नहीं करना चाहते। आध्यात्मिक क्षेत्र में स्वार्थी होना अच्छी बात है किंतु लौकिक क्षेत्र में स्वार्थी होना आपको करुणा व वात्सल्य से रहित ही सिद्ध करता है।

रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आठवें श्लोक में आचार्य समंतभद्र स्वामी ने कहा है -

अनात्मार्थं बिना रागैः शास्ता शास्ति सतो हितम्।
ध्वनन् शिल्पिकर स्पर्शान् मुरजः किमपेक्षते।।

अर्थात आप्त भगवान राग के बिना अपना प्रयोजन न होने पर भी समीचीन भव्य जीवों को हित का उपदेश देते हैं क्योंकि बजाने वाले के हाथ के स्पर्श से शब्द करता हुआ मृदंग क्या अपेक्षा रखता है अर्थात कुछ भी नहीं।

भगवान महावीर स्वामी को केवलज्ञान होने के पश्चात जब उनकी दिव्यध्वनि खिरना आरंभ हुई तब दिव्यध्वनि के माध्यम से लाखों जीव लाभान्वित हुए। मनुष्य, देव व तिर्यंच तीन गतियों के जीवों ने धर्म की पावन गंगा में स्नान किया। अनेकों जीवों ने महाव्रत धारण किए, अनेकों ने अणुव्रत धारण किए व अनेकों जीवों ने सम्यग्दर्शन भी प्राप्त किया। भगवान के माध्यम से दिया गया उपदेश बिना किसी अपेक्षा के दिया गया। जगत में शत्रु व मित्र कहे जाने वाले लोगों को भी एक जैसा हित का उपदेश दिया। हिंसक व अहिंसक सभी प्राणियों को एक जैसा उपदेश दिया।

श्री रामचंद्र जी को भी जब १४ वर्ष का वनवास हुआ तब उनके माध्यम से भी अनेक जीवों की समस्याओं का समाधान किया गया, विपत्तियों में सहयोग किया। कुलभूषण - देशभूषण मुनिराज के उपसर्ग को भी दूर किया। किंतु लोक में महान माने जाने वाले कार्य भी बिना किसी अपेक्षा के ही संपन्न हुए।

इस प्रकार भगवान महावीर व रामचंद्र जी हमारे लिए आदर्श इसलिए हैं क्योंकि वे हमें निरपेक्ष भाव से कर्त्तव्य करने की प्रेरणा देते हैं। "कर्त्तव्य करने वालों को अधिकार भी मिलते ही हैं।"

"सभी आत्माएं समान हैं कोई भी छोटा - बड़ा नहीं।" - भगवान महावीर द्वारा प्रदत्त यह शिक्षा एक अमृत संजीवनी के रूप में कार्य करती है। यदि व्यक्ति के जीवन में इस भावना का विकास हो गया तो जीवन में से क्रोध, मान, माया व लोभ चारों ही कषाएं निकल जाएंगी। क्योंकि जब अपने जैसा है तो क्रोध किस पर करें ? जब अपने ही

समान है छोटा या बड़ा नहीं तो मान किस पर करें ? जब अपने जैसा ही जीव है तो छल किससे करें ? जब अपने जैसा है तो लोभ किसका करें ? इसी प्रकार जगत में तेजी से पनपने वाले हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील व परिग्रह जैसे पापों का लोप भी इसी अमृतमयी शिक्षा को ही अपनाने से होगा। जिस दिन विश्व के सब देशों में इस शिक्षा का विकास हो जाएगा उस दिन बड़े से बड़े विश्वयुद्ध भी टल जाएंगे। तेजी से बढ़ता हुआ मांसाहार भी नहीं पनप पाएगा क्योंकि जब प्रत्येक प्राणी ही एक जैसा दिखेगा तो फिर ऐसी हीन भावनाएं जन्म ही कैसे लेंगी ? इस प्रकार भगवान महावीर के माध्यम से प्रदत्त यह शिक्षा जगत में दुःख के कारण कहे जाने वाले पाप, कषाय इत्यादि को नाश करने में समर्थ हैं। अतः भगवान महावीर हमारे लिए आदर्श हैं।

इस प्रकार भगवान महावीर व भगवान राम का जीवन हमारे लिए आदर्श है क्योंकि हमें सुखी होना है, सुखी होने का उपाय वीतरागता है और वीतरागता प्रकट करने के लिए हमें उनके जैसा बनना पड़ेगा। जिस दिन भगवान महावीर व भगवान राम को आदर्श बना लिया उस दिन समस्याओं का समाधान स्वयमेव मिल जाएगा। लौकिक व पारलौकिक जीवन भी सुखमय बन जाएगा। अतः हम सभी भी भगवान महावीर व राम को अपने जीवन के आदर्श के रूप में स्थापित करें - ऐसी आशा के साथ .....

डॉ. राघवेंद्र शर्मा जी (पूर्व अध्यक्ष म.प्र. बाल संरक्षण आयोग, प्रदेश कार्यालय मंत्री भाजपा) के श्री नन्दीश्वर विद्यालय आगमन पर पौधारोपण एवं स्वागत की विशेष झलकियां

बोधकथा

कैसे मनायें? महावीर निर्वाणोत्सव

- पं. अभिनव शास्त्री, जबलपुर

सौरभ आज बहुत खुश था और खुश हो भी क्यों न? दीपावली पर्व जो आने वाला था। उसको यह पर्व सबसे अच्छा लगता था क्योंकि इस पर्व पर महीने भर पहले से ही, साफ-सफाई एक हफ्ते पहले से ही आना-जाना घरों में लोगों का, खरीदारी लाईटिंग-पटाखे-दीपक-नये-नये बर्तन-वस्त्र-गहने-नाश्ता-मिठाई गुलाल (आंगन सजाने को) आदि बहुत कुछ इस त्यौहार पर होता था। अतः इस पर्व का उसे-बहुत इंतजार रहता था। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी वह अपने दोस्तों के साथ बैठकर बहुत खुश हो रहा था और चेहरे से उसकी प्रसन्नता का अनुमान लगाया जा सकता था। उसके दोस्तों में बाहर से आया हुआ संस्कार नाम का भी एक दोस्त था जो सौरभ और सब दोस्तों की बातें ध्यान से सुन रहा था। सुनने के बाद संस्कार ने सौरभ से कहा कि तुम किन खुशियों की बात कर रहे हो? नाश्ता-मिठाई-दीपक-पटाखे-लाईटिंग, में तुम्हें मजा आता है? आनंद आता है? हाँ बहुत ज्यादा। मेरे दोस्तों को भी आता है। हाँ भाई सौरभ ठीक कह रहा है। साल में एक बार ही तो खुशियाँ मनाने का मौका मिलता है। अरे दोस्तों ये तुम कैसी बातें कर रहे हो? तुम्हें पता है, दीपावली पर्व का संबंध दीप-प्रकाश (उजाले) से नहीं वैराग्य से है। ये महावीर का निर्वाणोत्सव है, ये राग-रंग खुशियाँ मनाने वाला नहीं, वैराग्य वाला पर्व है, कर्मों के नाश का, सम्यग्दर्शन प्रगट करने वाला पर्व है और लाईटिंग-पटाखे दीपक आदि से तो बहुत सारे जीवों का घात होता है और उसमें आनंद मानना नरक गति का कारण है। ''हिंसानंदि रौद्रध्यान'' ये बाह्य प्रकाश का नहीं अंतरंग में केवलज्ञान के प्रकाश का पर्व है। सब जीवों पर दया, स्वयं की रक्षा और सबकी रक्षा का पर्व है। हम सब तो हर साल ऐसे ही मनाते थे। हमने तो अनजाने में न जाने कितने जीवों का घात करके पाप का बंध कर लिया, पर आज से हम सब संकल्प लेते हैं कि अब हम सच्ची दीपावली महावीर निर्वाणोत्सव मनायेंगे, हिंसा करके, मौज-मस्ती, मनोरंजन पूर्वक नहीं। अहिंसक तरीके उनकी पूजन-भक्ति-गुणगान करके, उनके जैसा आत्मा का ध्यान करके, पुरुषार्थ करके और ये भावना भाके कि हम भी जल्दी निर्वाण को प्राप्त करें।

जय जिनेन्द्र दोस्तों और धन्यवाद संस्कार जो इस बार तुमने हमें बहुत सारे पापों से बचा लिया।

सबका प्रस्थान, अब नये तरीके से, नये उत्साह से महावीर निर्वाणोत्सव मनाने के लिये।

भगवान महावीर

- पं. अर्चित जैन, खनियाँधाना

चैत्र सुदी तेरस के दिन जन्मे श्री भगवान, राजा सिद्धार्थ व रानी त्रिशला के द्वारा नाम दिया है वर्धमान
सुमेरू पर्वत पर जलाभिषेक के दौरान इन्द्रो द्वारा दिया नाम है वीर
सत्य असत्य के शंकाओ का समाधान के दौरान दो मुनियों नें दिया नाम है सन्मति
लुका-छिपी खेलते समय दिखा साप फनधारी पराक्रम के कारण नाम पड़ा अतिवीर
निडर, सहनशील, अहिंसक होने के कारण मिला नाम है महावीर।।

चतुर्थ अंक (वर्ष द्वितीय)
माह - अक्टूबर 2022

नव प्रसून

44

धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा व संस्कारों की पोषक पत्रिका . . . ई - मासिक पत्रिका

लेख

दिव्यता के दैदीप्यमान पुंज थे - भगवान महावीर

– पं. गणतंत्र ओजस्वी, आगरा

आज के भौतिकवादी युग में जहाँ चारों ओर हिंसा का ताण्डव नृत्य दिखाई दे रहा है ऐसे में उस अहिंसा के अवतार दिव्यता के दैदीप्यमान पुंज भगवान महावीर को कौन याद नहीं करता होगा? विश्व में हिंसा को रोकने एवं प्राणियों को दुःखों से बचाने के लिए अनेकों महापुरुषों ने सारा जीवन खपा दिया। अपना वर्चस्व त्याग बहुजनहिताय बढ़ चले, उन्हीं में से एक थे महावीर। महावीर का जन्म आज से तकरीबन 2600 वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को कुण्डलपुर ग्राम में हुआ था। उनके पिता राजा सिद्धार्थ तथा माता रानी त्रिशला थी। महावीर बनने की प्रक्रिया से पूर्व मारीचि, पुरुरवा भील, क्रूर सिंह जैसी अवस्थाओं में रहते हुए अहिंसाणुव्रत की अनुपालना, मांस न खाने की प्रतिज्ञा, अन्त समय में भी प्रतिज्ञा का दृढ़ता से पालन व सम्यकत्व व संयम का उत्कृष्ट आराधना उनके सन्मति नाम को सार्थक करती है। एक ओर जहां परम प्रभुता सम्पन्न आध्यात्मिक अनुभूति सौभाग्यप्रद रही, वहीं तीर्थंकर की वाणी में अश्रद्धा ने दुर्भाग्य को निमंत्रण दिया, जिसने अनेक विपरीत परिस्थितियों में महावीर के जीव को भटकाया। लेकिन सुख-दुःख के परिवर्तनीय चक्र ने फिर पलटा खाया और मुनिराजों के सानिध्य ने पुनः सुख की अविरल धारा से जोड़ दिया, जिसने शान्त परिणाम पूर्वक देह त्याग कर देवत्व के स्वर्गिक सुख का उपभोग कर सिद्धार्थ के आंगन में अवतरित हुआ। उस समय समस्त सृष्टि चहचहाने लगी, सर्वत्र प्रसन्नता का वातावरण, देवों का आगमन, रत्न वृष्टि, जन-गण-मन में हर्ष तथा घर-घर आनन्द छायो- के गीत गुंजायमान होने लगे। महावीर 30 वर्षों तक वैभव, सत्ता, सम्पन्नता व अतुल भोगों के बीच रहे। उन्हें जांचा परखा तथा उनकी निःसारता, निरुपयोगिता, अस्थिरता व जीवन की क्षणभंगुरता को समझ कंचन-कामिनी की लिप्सा से कोसों दूर निर्ग्रन्थ दिगम्बर साधु बन 'गृहवासी से वनवासी' बन गए। इसके बाद 12 वर्षों तक घोर तपश्चरण की प्रक्रिया तथा आत्म साधना की तल्लीनता में भयंकर सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास आदि बाह्य परिग्रहों को जीतते हुए अन्तरंग काम, क्रोध, मद, लोभ जैसे विकारों पर विजय प्राप्त कर वीतरागी सर्वज्ञ और हितोपदेशी तीर्थंकर महावीर बन गए। भगवान महावीर के समय में सर्वत्र हिंसा का बोलबाला था। धर्म के नाम पर मूक पशुओं तथा मनुष्यों तक की बलि चढ़ाई जा रही थी। ऐसे आक्रान्त समय में 30 वर्षों तक अपनी दिव्य देशना के माध्यम से सम्पूर्ण देश में अहिंसा का प्रचार किया और अहिंसावतारी महावीर पावापुरी से देह बन्धन से मुक्त हो विदेही सिद्ध भगवान महावीर बन गए। उनके प्रमुख सन्देश सभी आत्माएँ समान हैं पर चलकर सम्पूर्ण देश में समन्वय, सौहार्द्र एवं भाईचारे की भावना का विकास किया जा सकता है।

आरव जैन

रक्षा जैन

वाणी जैन

लेख

गौतम स्वामी का वर्तमान जीवन

- पं. अखिलेश शास्त्री, इन्दौर

वीर हिमाचल तैं निकसी गुरु गौतम के मुख कुंड डरी है।
मोह मोहाचल भेद चली जग की जड़ता तप दूर करी है।।

यह पंक्तियां प्रायः हम धर्म सभाओं में सुनते हैं वीर रूपी हिमाचल पर्वत से निकलकर ओंकार ध्वनि गौतम रूपी मुख कुंड में गई अर्थात् तीर्थंकर भगवान की वाणी का सार ग्रहण गौतम गणधर ने ही किया है।

हम सभी जानते हैं कि अभी भगवान तीर्थंकर महावीर का शासनकाल प्रवर्तित हो रहा है भगवान महावीर को मोक्ष गए लगभग २६०० वर्ष से अधिक समय हो गया है तीर्थंकर भगवान महावीर की दिव्य ध्वनि का रसास्वादन कुछ ही जीवों को प्राप्त हुआ लेकिन उनकी सर्वांग वाणी को व्यवस्थित करने का कार्य गौतम गणधर के द्वारा हुआ है। यदि गौतम गणधर जिनवाणी को अंगों में ना वांटते, जिनवाणी का रसास्वादन करके औरों को ना समझा देते तो शायद हमारे पास तक जिनवाणी ना आ पाती। इसलिए भगवान महावीर का योगदान तो सभी जीवों के ऊपर है ही। उनकी वाणी के द्वारा उनके बताए हुए मार्ग के द्वारा हम सभी जीव भव्य बनने का प्रयास करते हैं मोक्ष मार्ग पर चलने का प्रयास करते हैं। गौतम गणधर देव का भी महान उपकार है कि जिन्होंने जिनवाणी को और जीवों के योग्य सरल, सरस बनाया गौतम गणधर का जीवन कैसा रहा उसके संबंध में मैं आप सभी से चर्चा कर रहा हूं।

जम्बू द्वीप में भरत क्षेत्र में बहुत से देश हैं उन्हीं देशों में एक मगध नामक देश है जिसे आज हम पाटलिपुत्र या पटना के नाम से जानते हैं ब्राह्मणों के नगर में इंद्रभूति नामक पुत्र का जन्म हुआ जो कि गौतम शब्द से सुशोभित था।

गौतम के पिता का नाम शांडिल्य और मां का नाम स्थण्डिला था। गौतम को उनके पिता ने सभी वेदों का ज्ञान कराया। व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष शास्त्र आदि का भी ज्ञान कराया। और गौतम जब पढ़ चुके तो वह अपने पिता के गुरुकुल में ही पढ़ाने लगे और इतने बड़े विद्वान हुए कि उनके ५०० शिष्य उनसे ज्ञान प्राप्त करने लगे लेकिन ज्ञान होने के साथ-साथ अहम भी हो गया कि मैं गौतम, ज्योतिष शास्त्रों का जानकार, वैद्यक शास्त्रों का जानकार हूं, अलंकार शास्त्रों का जानकार हूं न्याय का जानकार मैं देवों के गुरु बृहस्पति के समान सब प्रकार की विद्याओं से परिपूर्ण हूँ। इस प्रकार का अहम गौतम को आ चुका था उनके अहंकार को नष्ट करने हेतु सौधर्मेन्द्र का आगमन हुआ। सौधर्मेन्द्र का आगमन भी किसी कारण बस हुआ। भगवान तीर्थंकर महावीर को केवल ज्ञान हो चुका केवल ज्ञान होने के पश्चात इंद्र की आज्ञा से कुबेर ने चार कोस लंबा-चौड़ा समवसरण निर्मित किया। वह मानस्तंभ, ध्वजा-दण्ड, घंटा, तोरण, जल से परिपूर्ण खाई, सरोवर, पुष्प वाटिका उच्च धूलि प्रकार नृत्य शालाओं, उपवनों से सुशोभित था तथा वेदिका अंतर्ध्वजा सुर्णवशाला, कल्पवृक्ष आदि से सुशोभित था। उसमें अनेक महलों की पंक्तियां थी। मकान सुवर्ण और मणियों से बनाए गए थे। वहां ऐसी मणियों की शालाएं थीं। जो गीत और बाजों से सुशोभित हो रही थी। समवशरण के चारों ओर चार बड़े- बड़े फाटक थे। वे सुवर्ण के निर्मित भवनों से भी अधिक मनोहर दिखते थे। उसमें १२ सभाएं थी, जिसमें मुनि, अर्जिका, कल्पवासी देव, ज्योतिषी देव, व्यन्तरदेव, भवनवासी देव, कल्पवासी देवांगना

ज्योतिषी देवों की देवांगना, भवनवासी देवों की देवांगनाऐं, मनुष्य तथा पशु उपस्थित थे। अशोक वृक्ष, दूंदुभि, छत्र, भामण्डल, सिंहासन, चमर, पुष्पवृष्टि और दिव्यध्वनि उक्त आठों प्रतिहार्यों से श्री वीर भगवान सुशोभित हो रहे थे। इसके अतिरिक्त १८ दोषों से रहित और ३४ अतिशयों से सुशोभित थे। भगवान जिनेंद्र समवसरण में विराजमान थे लेकिन विराजमान होने के बावजूद भी भगवान की

दिव्यध्वनि नहीं खिरी भगवान को मौन अवस्था में देखकर सौधर्म के इंद्र ने अवधिज्ञान से विचार किया कि यदि गौतम का आगमन हो जाए तो भगवान की दिव्य ध्वनि होने लगेगी। गौतम को लाने के विचार से इंद्र ने एक वृद्ध का रूप बना लिया। जिसके अंग-अंग कांप रहे थे। वह वृद्ध ब्राह्मण नगर की गौतमशाला में जा पहुँचा। वृद्ध के कांपते हुए हाथों में एक लकड़ी थी उसके मुंह में एक भी दांत नहीं थे, जिससे पूरे अक्षर भी नहीं निकल पाते थे। उस वृद्ध ने शाला में पहुँचकर आवाज लगाई। ब्राह्मणों! इस शाला में कौन- सा व्यक्ति है जो शास्त्रों का ज्ञाता हो और मेरे समस्त प्रश्नों का उत्तर दे सके।

वृद्ध की बातें सुनकर अपने ५०० शिष्यों द्वारा प्रेरित गौतम शुभवचन कहने लगा - हे वृद्ध! क्या तुझे नहीं मालूम इस विश्व में अनेक शास्त्रों में पारंगत और ५०० शिष्यों का प्रतिपालक मैं प्रसिद्ध हूं। तुम्हें अपने काव्य का बड़ा अभिमान हो रहा है कहो तो सही, उसका अर्थ मैं अभी बतला देता हूं। वृद्ध ने अपना काव्य इस प्रकार कहा -

धर्मद्वयं त्रिविधकाल समग्र कर्म, षड् द्रव्यकाय सहिताः समस्यैश्च लेश्याः।
तत्वानी संयमगतीसहिता पदार्थ-रंग प्रवेद मनिश वदचास्ति कायम।

धर्म के दो भेद कौन-कौन से हैं, तीन प्रकार के काल कौन हैं। उनमें काय सहित द्रव्य कौन हैं, काल किसे कहते हैं, इत्यादि को बतलाने वाला यह श्लोक था। और वृद्ध ने गौतम से इन सभी के अर्थ और वे कितने और कौन-कौन से हैं पूछे। गौतम वृद्ध के मुंह से सुने हुए इस श्लोक का अर्थ नहीं समझ पाए। फिर भी बड़े अभिमान के साथ कहा कि चल रे ब्राम्हण! अपने गुरु के निकट चल। मैं उन्हीं को इन प्रश्नों के उत्तर दूंगा तुम्हें उत्तर क्यों दूं। और गौतम उन वृद्ध के साथ में भगवान के समवसरण तक पहुँचे और जैसे ही गौतम ने मानस्तम्भ को देखा और उसकी अद्भुत शोभा को देखते ही उनका मान चकनाचूर हो गया और इसप्रकार विचार करने लगे कि जिस गुरु के सन्निकट इतनी विभूति विद्यमान हो, वह क्या पराजित किया जा सकता है? असंभव है। इसके बाद गौतम वीरनाथ भगवान का दर्शन कर उनकी स्तुति आदि करने लगे-

प्रभो! आप कामरूपी योद्धाओं को परास्त करने में निपुण हैं। सत्पुरुषों को उपदेश देने वाले हैं। अनेक मुनिराजों का समुदाय आपकी पूजा करता है। आप तीनों लोकों के तारक और उद्धारक हैं। आप कर्म शत्रुओं को नाश करने वाले हैं। त्रैलोक्य के इंद्र आपकी सेवा में लगे रहते हैं ऐसी विनम्र स्तुति कर गौतम, भगवान के चरणों में नत हुआ। इसके पश्चात वह ऐहिक विषयों से विरक्त हो गया कालांतर में उसने ५०० शिष्य मंडली तथा अन्य दो अपने भाइयों के साथ जिन जिन दीक्षा ले ली। सत्य है, जिन्हें संसार का भय है जो मोक्ष रूपी लक्ष्मी के उपासक हैं वे जरा भी देर नहीं करते। इस प्रकार गौतम स्वामी भगवान के गणधर हुए और उनके गणधर होते ही भगवान की दिव्य ध्वनि भी खिरने लगी। इस प्रकार से गौतम, गौतम से गौतम गणधर हुए और गौतम गणधर से कालांतर में वह मोक्ष प्राप्त करते हुए भगवान इंद्र भूति गौतम गणधर बने।

कविता

दीपावली - एक गंभीर पर्व

- पं. समकित शास्त्री, ईशागढ

केवलज्ञान महोत्सव में, जन-जन चित हुलसाया था,
महावीर प्रभु के मुख से सबने अमृत पाया था।
तीस वर्ष अनवरत रूप से, जिसका लाभ मिला था,
हर प्राणी का रोम-रोम पुलकित हो खिला खिला था।।
समय आ गया अब तो, उनका सिद्ध पुरी जाने का,
कभी नहीं संसार भंवर में, अब वापस आने का।
खबर मिली जब लोगो को, महावीर मोक्ष जाएंगे,
नहीं कभी अब वे इस भव, अटवी में फिर आयेंगे।।
नैना उनके भीग गए, आंसू में एक विरोध दिखा,
एक तरफ तो हर्ष किंतु, अश्कों में एक वियोग दिखा।
जिस वाणी का लाभ अनेकों वर्षों से मिलता था,
जिनको देख-देख जन-जन का, हृदय कमल खिलता था।।
दिन में चार बार जिनकी अमृत वाणी खिरती थी,
रोग शोक अज्ञान महा मिथ्यात्व तिमिर हरती थी।
जिसने ज्ञान प्रकाश दिया, अब चला गया वह तारा,
हुआ वियोग धर्म पितु का गंभीर हुआ जग सारा।।
हां हां! निर्वाण हुआ प्रभु का, इसकी तुम खुशी मनाओ,
किंतु विचारो! तनिक हृदय को अब गंभीर बनाओ।
जैसे बिटिया की विदाई पर पिता हाल जो होता,
हर्ष वियोग साथ में वह गंभीरपना अनुभवता।।
सोचो! कुछ संपत्ति पिता जी हमको सौंप गए हैं,
धर्म ध्वजा इन हाथों में लहराती छोड़ गए हैं।
गौतम स्वामी से लेकर, सैकड़ों महा-आर्यों ने,
आज तलक अनवरत रखा वह परचम आचार्यों ने।।
है इसको लहराने की बारी हम सबकी आई,
किंतु प्रथम जैनत्व, स्वयं में लाना होगा भाई।
सत्य अहिंसा अनेकांत, पहले विचार में लाकर,
सन्मति-तर्क-विवेक पूर्वक फिर आचार सजाकर।।
समता मैत्री अनुकम्पा वात्सल्य हृदय आएगा,
दया शांति पावन पवित्र जब जीवन हो जाएगा।
आत्मज्ञान के फलस्वरूप जब उछलेगा अंतर्मन,
सच्चे वीरभक्त नर का बोला करता है जीवन।।
महावीर को माना पर महावीर की नहीं मानी,
तत्वज्ञान को नहीं जान बस अपनी की मनमानी।
खान-पान की समझ रहित बस भेड़ चाल बहते हो,
शिष्टाचार रहित जीवन उनको जैनी कहते हो?
जीवन में जैनत्व लिए जो वीर, आज सीमित हैं,
जिन्हें देखकर लोग कहें- "महावीर आज जीवित हैं"।
इस निर्वाण महोत्सव में गंभीर पने से सोचें,
अपने भीतर के दोषों को सहज पने अवलोकें।।
अब जो पाप हुए अतीत में पश्चाताप से धोलें,
पाप त्यागने का प्रण लेकर क्षमा पटल को खोलें।
क्षमा मांग- नहिं मिले, जिनधर्म इतना क्रूर नहीं है,
तत्वज्ञान की ओर बढ़ो फिर 'समकित' दूर नहीं है।।

जैन मिलन शाखा खनियाँधाना द्वारा अहिंसात्मक दिवाली मनाने का सन्देश

चतुर्थ अंक (वर्ष द्वितीय)
माह - अक्टूबर 2022

नव प्रसूत

48

धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा व संस्कारों की पोषक पत्रिका . . .

ई - मासिक पत्रिका

वर्ग पहेली

नव प्रसूत प्रतियोगिता क्र :-16

संकलित - अखिलेश शास्त्री 'अखिल' इन्दौर

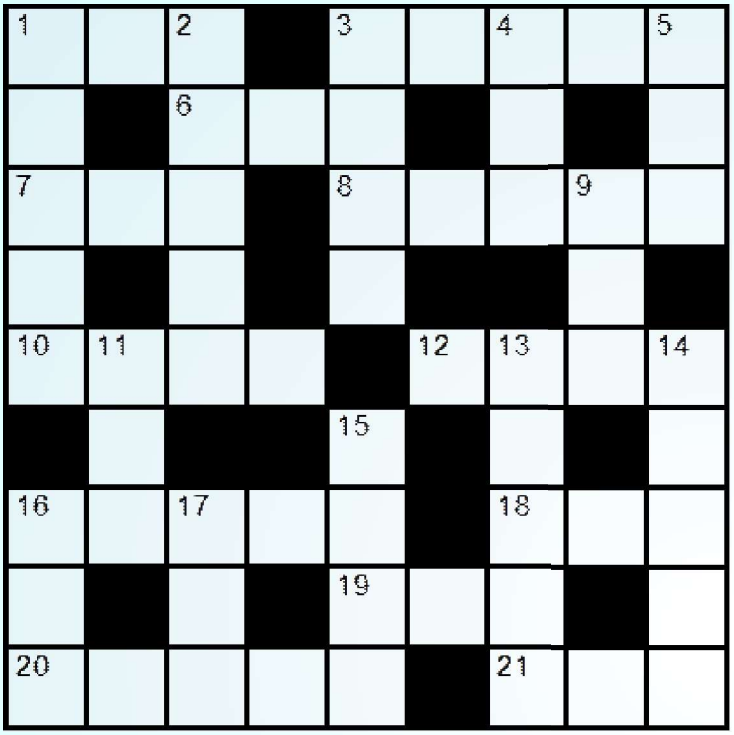

ऊपर से नीचे–

1. क्रोध से आँखें चढ़ाना (2, 3)
2. गायब (5)
3. किसी बात के ठीक होने की जांच (4)
4. लानत (3)
5. क्रुद्ध होना (3)
9. हाथ–कटा कपड़ा (3)
11. श्रृंगार रस की उर्दू कविता (3)
13. सावधान (5)
14. निरंतर (5)
15. बोध से पूर्ण (4)
16. स्वाद में तीखा (3)
17. मस्त (3)

बाएँ से दाएँ–

1. पर्व (3)
3. अफसर (5)
6. बेढंगा (3)
7, डंडी लगी छोटी कटोरी (3)
8. घात में रहना (5)
10. सभ्यता (4)
12. तेज़ी (4)
16. लेखनी–दवात आदि रखने की वस्तु (5)
18. पेन्सिल की लिखावट मिटाने वाली चीज़ (3)
19. लेख का पूर्व रूप (3)
20. पत्र – पत्रिकाएँ पढने का स्थान (5)
21. घर्षण (3)

नव-प्रसूत वर्णमाला प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता क्रमांक - 15
के सही उत्तर प्रदाता हैं -
नाम - श्रीमती मधु जैन, गाजियाबाद

नोट :- 'नव-प्रसूत' प्रतियोगिताओं का क्रम क्रमशः इसी प्रकार से प्रस्तुत किया जाएगा। साथ ही सही उत्तर देने वाले चयनित **5** विजेता प्रतिभागियों को **100–100** रुपये का नगद पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।
आप सभी नवप्रसूत प्रतियोगिता में भाग लें एवं अन्य लोगों को प्रेरित करें और सही उत्तर लिखकर पूरा पता व अपने मोबाईल नंबर के साथ 7389821495 पर व्हाट्सअप करें।

त्रय ज्ञान गोष्ठी सानंद सम्पन्न...

(खनियाँधाना) :- श्री नंदीश्वर विद्यापीठ चेतनबाग, खनियाँधाना में आवासीय छात्रावास में अध्ययनरत छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु अनेकानेक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इन्हीं गतिविधियों के अंतर्गत साप्ताहिक ज्ञानगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। इस सत्र में प्रथम ज्ञानगोष्ठी का आयोजन जयपुर से पधारे पं. अनिलजी शास्त्री की अध्यक्षता में किया गया। प्रथम ज्ञानगोष्ठी का विषय ''पंच परमेष्ठी - एक अनुशीलन'' रहा। इसमें 9 छात्रों ने भाग लिया, इनमें से प्रथम स्थान कक्षा 9वीं के छात्र निखिल जैन ने, द्वितीय स्थान कक्षा 10वीं के छात्र नीतेश जैन व तृतीय सीान कक्षा 10वीं के आयुष जैन ने प्राप्त किया।

इसी क्रम में द्वितीय ज्ञान गोष्ठी का आयोजन ''हमारे तीर्थंकर'' विषय पर किया गया। इसमें 9 छात्र वक्ताओं ने भाग लिया। इसमें प्रथम स्थान कक्षा 9वीं के छात्र शुभ जैन ने, द्वितीय स्थान स्पर्श जैन ने, तृतीय स्थान कक्षा 06वीं के मुदित जैन ने प्राप्त किया। तथा तृतीय ज्ञान गोष्ठी का आयोजन ''पाँच पाप एक विवेचन'' नामक विषय पर किया गया। इसमें 10 छात्र वक्ताओं ने भाग लिया जिनमें प्रथम स्थान कक्षा 8वीं के नीलांशु जैन ने, द्वितीय स्थान कक्षा 8वीं के श्रीयांश जैन ने व तृतीय स्थान कक्षा 7वीं के अक्षत जैन ने प्राप्त किया।

उपर्युक्त ज्ञानगोष्ठियों में मंचासीन अतिथियों में विद्यालय प्राचार्य श्री प्रमोद जैन 'प्रेम', नंदीश्वर विद्यापीठ प्राचार्य शास्त्री दीपक जैन 'ध्रुव', अधीक्षक आकाश शास्त्री 'अनंत' व अध्यापक आदर्श जैन, सम्यक जैन की विशेष उपस्थिति रही। गोष्ठियों में भाग लेने वाले समस्त छात्रों को मंचासीन अतिथियों द्वारा उत्साहवर्धन हेतु पारितोषिक प्रदान किए गए।

पर्यावरण संरक्षण को लेकर विद्यार्थियों को दी जानकारी

(पिड़ावा) :- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कोटड़ी में सुरक्षित व प्रदूषण रहित दीपावली मनाने के पोस्टर का विमोचन कर विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। चिन्मय जैन ने बताया कि सुरक्षित व प्रदूषण रहित दीपावली को लेकर बाल सभा का आयोजन किया गया। इसमें विद्यार्थियों को सुरक्षित व हानि रहित दीपावली मनाने का संदेश दिया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रदूषण मुक्त दीपावली पोस्टर का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ अध्यापक खजानमलजी ने पटाखों से होने वाले प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण व ग्लोबल वार्मिंग के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी दी। शिखर शास्त्री ने पुराणों व प्राचीन धर्मग्रंथों में पर्यावरण सुरक्षा का हवाला देकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। सरपंच हरिराम गोचर ने स्वच्छ, स्वस्थ व सुरक्षित गांव-गली की जानकारी देकर बच्चों को स्वच्छता अपनाने की जानकारी दी। कार्यक्रम में दिलीप देशपांडे, सालगराम दांगी, संजय कुमार जैन सहित अन्य शिक्षक व स्कूली बच्चे शामिल रहे। सभी ने उच्च आदर्श एवं अहिंसात्मक दीपावली मनाने का संकल्प लिया।

चतुर्थ अंक (वर्ष द्वितीय)
माह - अक्टूबर 2022

नव प्रसून

50

धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा व संस्कारों की पोषक पत्रिका . . .

ई - मासिक पत्रिका

अहिंसा सभा श्री नन्दीश्वर विद्यापीठ/विद्यालय खनियाँधाना के दृश्य...

चतुर्थ अंक (वर्ष द्वितीय)
माह - अक्टूबर 2022

नव प्रसूत

51

धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा व संस्कारों की पोषक पत्रिका . . .

ई - मासिक पत्रिका

।।श्री वीतरागाय नमः।।

श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन नया मंदिर ट्रस्टान्तर्गत संचालित

श्री महावीर - कुन्दकुन्द - कहान नंदीश्वर दिगम्बर जैन विद्यापीठ एवं नंदीश्वर विद्यालय

खनियाँधाना जिला शिवपुरी (म.प्र.)

निर्देशक
आ. बाल ब्र. पं.
श्री अभिनंदनकुमारजी
शास्त्री (प्रतिष्ठाचार्य)

संस्थापक
स्व. श्री प्यारेलाल पन्नालाल जैन गजया
कोलकाता

प्रमुख परामर्शदाता
आ. बाल ब्र. पं.
श्री सुमतप्रकाशजी
खनियाँधाना

संरक्षक एवं सहयोगी

श्रीमति अनुपमाजी
राकेशजी जैन
दुबई

परम शिरोमणी संरक्षक

श्रीमति अनुपमा राकेश जैन, दुबई
श्री तीर्थेश संजय दीवान, सूरत
डॉ. मिस सरला मारो, नैरोबी केन्या
श्री जयेश-मिनल टोलिया, शिकागो (यू.एस.ए.)

संरक्षकगण

श्री अजितप्रसाद वैभव कुमार (राजपुर रोड) दिल्ली
श्री विनोद कुमार जी (कोटा वाले) जयपुर
श्री रतिभाई गंगर (दहीसर) मुंबई
श्री केवलचंद जी बाडी (बरेली)
श्री पीताम्बर लाल ललितकुमार पाटनी, छिंदवाड़ा
श्री बज्रसेन शोभित कुमार जैन (शाहदरा) दिल्ली
सुश्री भारती बेन कोठारी, मुंबई
श्री सुंदर आत्मार्थी चैरिटेबल ट्रस्ट, खेरवारा उदयपुर (राज.)

श्री आदेशजी वत्सल
(IRS)
अहमदाबाद

चतुर्थ अंक (वर्ष द्वितीय)
माह - अक्टूबर 2022

नव प्रसूत

52

धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा व संस्कारों की पोषक पत्रिका . . .

ई - मासिक पत्रिका

ट्रस्ट मंडल

अध्यक्ष : आ. बाल ब्र. पं. श्री अभिनंदनकुमारजी शास्त्री (प्रतिष्ठाचार्य)

संरक्षक : श्री ताराचंद जैन 'सिंघई'

उपाध्यक्ष : श्री राजकुमार जैन 'पड़हार'

महामंत्री : श्री सुनील जैन 'सरल'

मंत्री : श्री कैलाशचन्द्र जैन 'चौधरी'

कोषाध्यक्ष : श्री नरेन्द्रकुमार जैन 'कोठादार'

सह-कोषाध्यक्ष : श्री सतीशकुमार जैन 'वैद्य'

विद्यालय प्रभारी : श्री राकेश कुमार जैन 'सिंघई'

प्रचार मंत्री : श्री भानू कुमार जैन 'चौधरी'

ट्रस्टी : श्री राजीव जैन 'सिंघई'

: श्री राकेश जैन 'कठरया'

श्री नेमिनाथ दि. जैन नया मंदिर ट्रस्ट
खनियाँधाना जिला शिवपुरी (म.प्र.)

प्रचार प्रभारी

श्री सचिन मोदी, खनियाँधाना
श्री एकत्व पुजारी, खनियाँधाना

संपादक मंडल

पं. अखिलेश शास्त्री 'अखिल' इंदौर
पं. चर्चित शास्त्री खनियाँधाना
पं. समकित शास्त्री कोठादार खनियाँधाना
पं. अनुभव शास्त्री खनियाँधाना

सहयोगी

पं. संजय शास्त्री 'साव'
श्री मुकेश 'कोठादार'
पं. अंकित शास्त्री 'सरल'
पं. सोमिल शास्त्री 'मोदी'
पं. आकाश शास्त्री 'चौधरी'
पं. आकाश शास्त्री 'अनंत'
(अधीक्षक, नंदीश्वर विद्यापीठ)

प्रबंध सम्पादन

श्री नीलेश जैन
इंदौर
(एन. जे. कंप्यूटर्स वर्क शॉप)
श्री आदर्श जैन
(अशोक नगर)
अध्यापक, श्री नंदीश्वर विद्यापीठ खनियाँधाना

नव-प्रसूत ई-मासिक पत्रिका **वीर निर्वाण संवत् 2548**

प्रकाशक एवं सर्वाधिकार सुरक्षित
श्री नेमिनाथ दि. जैन नया मंदिर ट्रस्टान्तर्गत संचालित
श्री महावीर - कुन्दकुन्द - कहान नंदीश्वर
दिगम्बर जैन विद्यापीठ एवं नंदीश्वर विद्यालय
खनियाँधाना जिला शिवपुरी (म.प्र.)

प्रधान सम्पादक
साहित्याचार्य शास्त्री दीपक जैन 'ध्रुव'
(प्राचार्य - श्री नंदीश्वर विद्यापीठ)

ई-पत्रिका में प्रकाशन एवं जानकारी हेतु सम्पर्क करें
मो. 7354128201, 7223951238